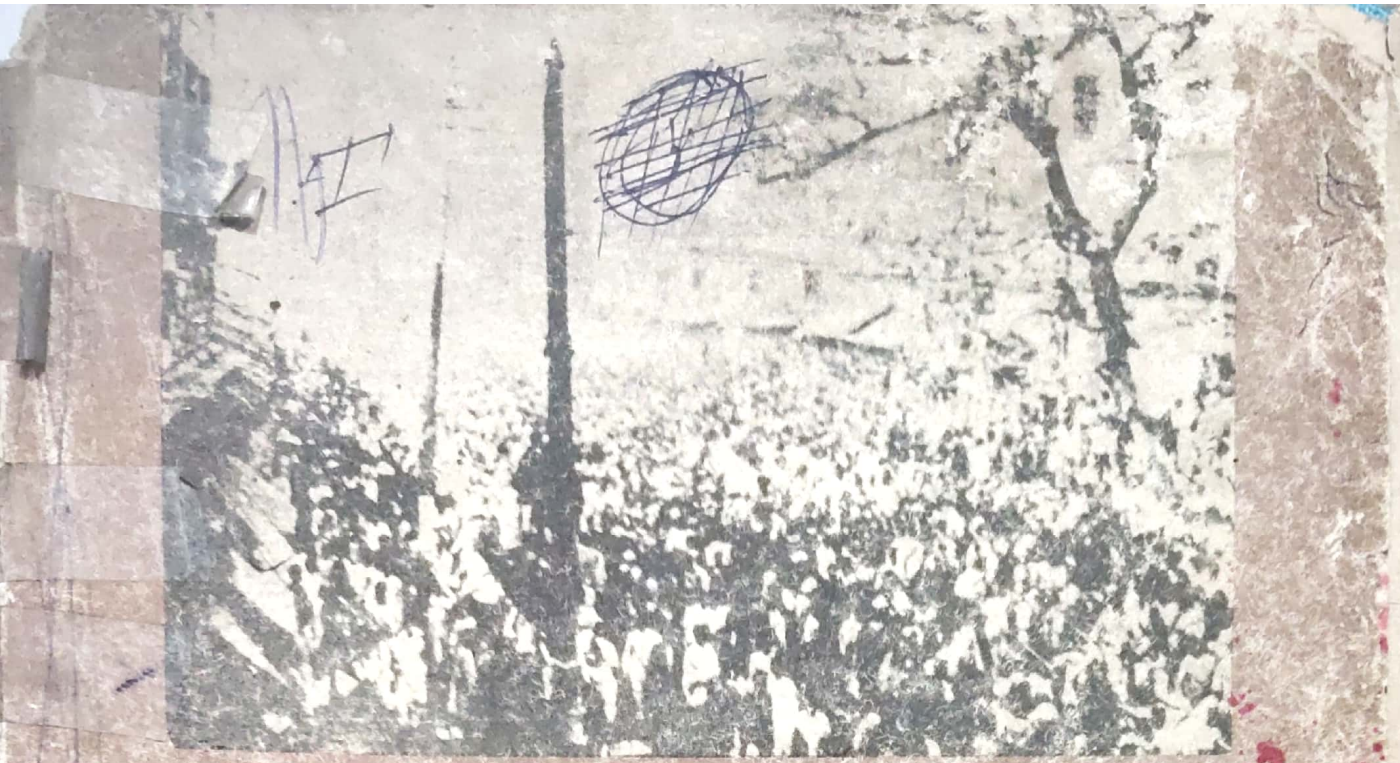

आधुनिक भारत

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रम

प्राक्कथन

अध्याय : 1

अठारहवीं सदी का भारत

अध्याय : 2

भारत में यूरोपीयों का प्रवेश और अंग्रेजों की विजय

अध्याय : 3

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की आर्थिक नीतियां

अध्याय : 4

प्रशासनिक संगठन और सामाजिक तथा सांस्कृतिक नीति

अध्याय : 5

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण

अध्याय : 6

1857 का विद्रोह

अध्याय : 7

1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन 1

अध्याय : 8

ब्रिटिश शासन आर्थिक प्रभाव 1

अध्याय : 9

नए भारत का उदय : राष्ट्रीय आंदोलन 1858–1905 1

अध्याय : 10

नए भारत का उदय : 1858 के बाद धार्मिक और सामाजिक सुधार 1

अध्याय : 11

राष्ट्रवादी आंदोलन 1905–1918 16

Scanned with CamScanner

मुगल शासक (1526 - 1857)

शासक	शासन काल
1) जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर	1526 – 1530
2) नासिरुद्दीन हुमायूँ	1530 – 1556
3) 1540 से 1545 तक दिल्ली पर अफगान शासक शेरशाह का शासन था।	
4) जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर	1556 – 1605
5) जहाँगीर	1605 – 1627
6) शाहजहाँ	1627 – 1658
7) औरंगजेब	1658 – 1707
8) बहादुरशाह	1707 – 1712
9) जहाँदारशाह	1712 – 1713
10) फर्रुखसियर	1713 - 1719
11) रफीउद्दारजात	1719
12) रफीउद्दौला	1719
13) मुहम्मद शाह	1719 – 1748
14) अहमदशाह	1748 – 1753
15) आलमगीर [II]	1753 – 1758
16) शाह आलम [II]	1758 – 1806
17) अकबर [II]	1806 – 1837
18) बहादुर शाह [II]	1837 – 1857

★ महत्त्वपूर्ण बिंदु

i) औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् आने वाले (52) वर्षों में (8) सम्राटों ने दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार जमाया।

ii) औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके तीन पुत्र — मुअज्जम - काबुल, आजम - गुजरात, कामबख्श - बीजापुर, का सूबेदार था।

iii) औरंगजेब की मृत्यु के समय कुल (21) प्रांत थे।

iv) औरंगजेब की नीतियों का प्रबल विरोधी उसका पुत्र शहजादा अकबर पहले ही मारा जा चुका था।

v) जाजो में जून 1707 ई० में लड़े गये युद्ध में मुअज्जम की सेनाओं ने आज़म को परास्त कर सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

vi) मुअज्जम - बहादुरशाह प्रथम की उपाधि के साथ दिल्ली के तख्त पर बैठा।

Scanned with CamScanner

आधुनिक भारत [Modern India]

मुगल साम्राज्य का पतन

* औरंगजेब की मौत होने पर उसके तीनों बेटों के बीच गद्दी के लिए संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में 65 वर्षीय बहादुरशाह विजयी रहा। उसने समझौते और मेल-मिलाप की नीति अपनाई। इन्हें मुअज्जम व शाहे-बे-खबर कहा जाता है।

* उत्तराधिकार के युद्ध में गुरु गोविन्द सिंह ने मुअज्जम का साथ दिया था

* 1712 में उसकी मौत ने साम्राज्य को एक बार फिर गृह-युद्ध में फंसा दिया। इस गृह-युद्ध और बाद के उत्तराधिकार संबंधी लड़ाइयों के दौरान मुगल राजनीति में एक नया तत्व आ गया। पहले सत्ता के लिए संघर्ष सिर्फ शहजादों के बीच होते थे। परन्तु अब महत्वाकांक्षी सामंत सत्ता के लिए सीधे दावेदार बन गए और गद्दी हथियाने के लिए शहजादों का इस्तेमाल वे महज कठपुतली के रूप में करने लगे।

* जहाँदार शाह को लम्पट मूर्ख भी कहा जाता है। जहाँदार शाह अपने शासन में लाल कुमारी नाम की वेश्या को हस्तक्षेप करने का आदेश दे रखा था।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

1803

(a) 1803 में दिल्ली पर ब्रिटिश फौज का कब्जा हो गया तथा मुगलबादशाह एक विदेशी ताकत का पेंशनयाफ्ता होकर रह गया।

(b) साम्राज्य की एकता और अखण्डता / स्थिरता औरंगजेब के लंबे और कठोर शासन के दौरान डगमगा गई। फिर भी 1707 में उसकी मौत के (उपरान्त) समय मुगल प्रशासन काफी कुशल तथा मुगल फौज काफी ताकतवर थी।

(c) औरंगजेब की मौत होने पर उसके तीनो बेटों के बीच गद्दी के लिए संघर्ष हुआ। इस संघर्ष मे 65 वर्षीय बहादुरशाह विजयी रहा। उसने समझौते और मेल-मिलाप की नीति अपनाई। उसने हिंदू सरदारों और राजाओं के प्रति अधिक सहिष्णुतापूर्ण रुख अपनाया।

(d) उसने आमेर की गद्दी पर जयसिंह को हटाकर उसके छोटे भाई विजयसिंह को बिठाने और मारवाड़ के राजा अजीत सिंह को मुगल सत्ता की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर करने की कोशिशें की। उसने आमेर और जोधपुर शहरों मे फौजी डेरा जमाने की कोशिश भी की।

बहादुरशाह

1. समझौता व मेल-मिलाप की नीति
2. आमेर – जयसिंह / विजयसिंह
3. मारवाड़ – अजीत सिंह
4. मराठा – ऊपरी मेल-मिलाप
5. दक्कन की सरदेशमुखी चौथ नहीं
6. साहू को विधिवत राजा नहीं माना
7. साहू व ताराबाई की लड़ाई
8. गुरु गोविंद सिंह के साथ मेल मिलाप
9. बन्दा बहादुर का बगावत – लोहगढ़
10. लोहगढ़ – गुरु गोविंद सिंह अम्बाला के निकट, हिमालय की तराई मे बनवाया

(2)

किन्तु इसका बड़ा प्रतिरोध हुआ। उसने दोनों राज्यों से तुरन्त ही समझौता कर लिया। राजा जयसिंह और अजीत सिंह को अपने राज्य तो फिर से मिल गए परन्तु उच्च मंसबों तथा मालवा और गुजरात जैसे महत्वपूर्ण सूबों के सूबेदारों के ओहदों की उनकी माँग नहीं मानी गई।

सरदेशमुखी — कर राज्यों की आय का $\frac{1}{10}$ भाग था

चौथ — मुगल क्षेत्र व पड़ोसी राज्य की आय का चौथा हिस्सा, जो आक्रमण से सुरक्षा के रूप में था।

(e) मराठा सरदारों के प्रति उसकी नीति ऊपरी तौर पर ही मेल-मिलाप की थी। उसने उन्हें दक्कन की सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार दे दिया मगर चौथ का अधिकार नहीं दिया, बहादुरशाह ने साहू को मराठों का विधिवत राजा नहीं माना। इस प्रकार उसने मराठा राज्य के ऊपर आधिपत्य के लिए ताराबाई और साहू को आपस में लड़ने को छोड़ दिया।

(a) लौहगढ़
(b) बुंदेला सदार — छत्रसाल
(c) जाट सरदार — चूरामन
(d) अंधाधुंध जागीर व पदोन्नति
(e) 1712 — गृहयुद्ध — मौत
(f) महत्वकांक्षी सामंत शहजादे का इस्तेमाल कठपुतली के रूप में करने लगे।

(f) बहादुरशाह ने गुरु गोविन्द सिंह के साथ मेल-मिलाप के संबंध स्थापित किए। परन्तु गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने पंजाब में बगावत का झंडा बुलन्द किया तब बादशाह ने कड़ी कारवाई करने का फैसला किया और विद्रोहियों के खिलाफ अभियान का नेतृत्व खुद किया। यद्यपि बादशाह लौहगढ़ तथा अन्य महत्वपूर्ण सिख केन्द्रों पर कब्जा जमाने में सफल हो गया, फिर भी सिखों को दबाया नहीं जा सका और 1712 में उन्होंने लौहगढ़ वापस ले लिया। लौहगढ़ किला गुरु गोविन्द सिंह ने अम्बाला के उत्तर-पूर्व में हिमालय की तराई में बनाया

1707 में — शाही खजाने में 13 करोड़ रुपये

(g) बहादुरशाह ने बुंदेला सदार छत्रसाल से मेल-मिलाप कर लिया। छत्रसाल एक निष्ठावान सामंत बना रहा।

(h) बादशाह ने जाट सरदार चूरामन से भी दोस्ती कर ली। चूरामन ने बंदा बहादुर के खिलाफ अभियान में बादशाह का साथ दिया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09977922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

(i) बहादुरशाह के शासनकाल के दौरान अंधाधुंध जागीरें देने तथा पदोन्नति करने के फलस्वरूप राजकीय वित्त की स्थिति पहले से भी खराब हो गई। शाही खजाने में 1707 में करीब 13 करोड़ रुपये की रकम ही रह गई। उसके शासन काल में शाही खजाने में जो कुछ रकम बची थी खत्म हो गई।

Scanned with CamScanner

③

(k) 1712 में बहादुरशाह की मौत ने साम्राज्य को एक बार फिर गृह युद्ध में फंसा दिया। इस गृह युद्ध और बाद के उत्तराधिकार संबंधी लड़ाईयों के दौरान मुगल राजनीति में एक नया तत्व आ गया। पहले सत्ता के लिए संघर्ष सिर्फ शहजादों के बीच होते थे। परन्तु अब महत्वकांक्षी सामंत सत्ता के लिए सीधे दावेदार बन गए और गद्दी हथियाने के लिए शहजादों का इस्तेमाल वे महज कठपुतली के रूप में करने लगी।

जहाँदारशाह

(i) जुल्फिकार खाँ का समर्थन
(ii) जजिया समाप्त
(iii) आमेर – जयसिंह – राजा सवाई
(iv) मारवाड़ – अजीत सिंह (2) महाराजा
(v) जयसिंह – मालवा, अजीत सिंह – गुजरात } सूबेदार
(vi) दक्कन की चौथ व सरदेशमुखी
(vii) चूरामन – जाट व छत्रसाल – बुंदेला के साथ मेल-मिलाप
(viii) केवल बंदा व सिखों के प्रति दमन की नीति
(ix) इजारा को बढ़ावा दिया

बहादुरशाह की मौत के बाद जो गृह-युद्ध हुआ उसमें उसका एक कम काबिल बेटा जहाँदार शाह विजयी रहा क्योंकि उसे उस समय के सबसे शक्तिशाली सामंत जुल्फिकार खाँ का समर्थन मिला।

—— x ——

(i) जहाँदार शाह के शासनकाल में प्रशासन वस्तुतः अत्यंत योग्य और कर्मठ जुल्फिकार खाँ के हाथों में था। जुल्फिकार खाँ वजीर बन गया था। उसने तेजी से औरंगजेब की नीतियाँ बदल दिया। घृणित जजिया को खत्म कर दिया गया। आमेर के जयसिंह को मिर्जा राजा सवाई की पदवी दी गई और उन्हें मालवा का सूबेदार बना दिया गया। मारवाड़ के अजीत सिंह को महाराजा की पदवी दी गई और गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया।

(ii) जुल्फिकार खाँ ने पहले की उस गैर-सरकारी व्यवस्था की पुष्टि कर दी जो दक्कन में उसके सहायक दाऊद खाँ पन्नी ने 1711 में मराठा राजा साहू के साथ में की थी। इस व्यवस्था के अनुसार मराठा शासक को दक्कन की चौथ और सरदेशमुखी इस शर्त पर दे दी गई की उनकी वसूली मुगल अधिकारी करेंगे और फिर मराठा अधिकारियों को दे देंगे।

(iii) जुल्फिकार खाँ ने चूरामन-जाट और छत्रसाल-बुंदेला के साथ भी मेल-मिलाप कर लिया। केवल बंदा और सिखों के प्रति उसने दमन की नीति जारी रखी।

(iv) जागीरों और ओहदों की अंधाधुंध वृद्धि पर रोक लगाकर जुल्फिकार खाँ साम्राज्य की वित्तीय हालात को सुधारने की कोशिश की। उसने एक गलत प्रवृत्ति "इजारा" को बढ़ावा दिया। निश्चित दर पर भू-राजस्व वसूल करने के बदले सरकार ने इजारेदारों (लगान के ठेकेदारों) और बिचौलियों के साथ यह करार करना आरंभ कर दिया कि सरकार को एक निश्चित मुद्राराशि दें। मगर किसानों से जितना लगान वसूल कर सकें उतना करने के लिए उन्हें आजाद छोड़ दिया गया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

4

सैयद बंधु

1713-1720

फर्रूखसियर

1. सैयद बंधु के सहयोग से
2. अब्दुल्ला खाँ – वजीर
हुसैन अली खाँ – मीर बख्शी
3. जजिया / तीर्थ यात्री कर समाप्त
4. साहू – को सरदेशमुखी व चौथ
15000 घुड़सवार दक्कन में सहयोग
5. निजामुल मुल्क व मुहम्मद अमीन खाँ ने षड्यंत्र किया

मुहम्मदशाह

1. जाट सरदार चूरामन से दोस्ती
2. साहू – दक्कन के 6 प्रांतों की चौथ और सरदेशमुखी

15000 घुड़सवार से मदद

(v) अनेक शाही सामंतों ने जुल्फिकार खाँ के विरुद्ध षड्यंत्र किया। इससे भी बुरी बात यह हुई कि बादशाह ने उसे अपना विश्वास और सहयोग पूरी तरह नहीं दिया। बेईमान कृपापात्र लोगों ने जुल्फिकार खाँ के खिलाफ बादशाह के कान भरे। कायर बादशाह की हिम्मत नहीं हुई कि ताकतवर वजीर को बर्खास्त कर सके, मगर उसने गुप्त रूप से वजीर के खिलाफ षड्यंत्र करना शुरु किया।

(vi) जहाँदार शाह का यशहीन शासन जल्द ही जनवरी 1713 में आगरा में उसके भतीजे फर्रूखसियर के हाथों हार जाने पर समाप्त हो गया।

(क) फर्रूखसियर को अपनी जीत सैयद बंधुओं अब्दुल्ला खाँ और हुसैन अली खाँ बराह के कारण मिली। इसलिए अब्दुल्ला खाँ को वजीर का पद और हुसैन अली खाँ को मीर बख्शी का ओहदा मिला।

(ख) फर्रूखसियर सैयद बंधुओं को बेरोकटोक काम करने देने के लिए तैयार नहीं था, बल्कि वह अपनी व्यक्तिगत सत्ता कायम करना चाहता था। दूसरी ओर सैयद बंधुओं को पक्का विश्वास था कि केवल उनके हाथों में वास्तविक सत्ता आने तथा बादशाह के नाममात्र के शासक होने पर ही प्रशासन ठीक ढंग से चलाया जा सकता है, साम्राज्य का अपकर्ष रोका जा सकता है और उनकी अपनी स्थिति सुरक्षित रखी जा सकती है। इसतरह बादशाह फर्रूखसियर और उसके वजीर तथा मीर बख्शी के बीच सत्ता के लिए एक लम्बा संघर्ष आरम्भ हो गया। आखिरकार सैयद बंधुओं ने 1719 में उसे गद्दी से उतार दिया और मार डाला।

(ग) सैयद बंधुओं ने 18 वर्षीय मुहम्मदशाह को हिन्दुस्तान का बादशाह बनाया। फर्रूखसियर के तीनों उत्तराधिकारी सैयद बन्धुओं के हाथों की कठपुतली मात्र थे। 1713 से 1720 में उनके उखाड़ फेंके जाने तक राजकीय प्रशासन में सैयद बंधुओं की चलती रही।

(घ) सैयद बंधुओं ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। उन्होंने राजपूतों, मराठों और जाटों के साथ मेल-मिलाप कर उनका इस्तेमाल फर्रूखसियर और प्रतिद्वन्द्वी सामंतों के खिलाफ करने की कोशिश की। उन्होंने फर्रूखसियर के गद्दी पर बैठते ही जजिया को तुरन्त खत्म कर दिया। इसी प्रकार कई जगहों में तीर्थयात्री कर (Pilgrim Tax) हटा दिया।

(ङ) उन्होंने मारवाड़ के अजीत सिंह, आमेर के जयसिंह तथा अन्य राजपूत राजकुमारों को प्रशासन में प्रभावशाली ओहदे देकर अपनी ओर मिला लिया। उन्होंने जाट सरदार चूरामन के साथ दोस्ती कर ली।

DR. AFROZE EQBAL
Net Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

(5)

(च) राजा साहू को (शिवाजी) का स्वराज्य तथा दक्कन के छह प्रांतों से चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार देकर उसके साथ समझौता कर लिया। बदले में साहू उन्हें 15000 घुड़सवारों के द्वारा दक्कन में समर्थन देने को तैयार हो गया।

सैय्यद बन्धु

(छ) सैय्यद बंधुओं ने बगावतों को दबाने और साम्राज्य को प्रशासनिक बिखराव से बचाने के लिए जोरदार प्रयास किए। इन कामों में मुख्य रूप से वे इसलिए विफल रहे कि उन्हें निरंतर राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता झगड़े और दरबारी षड्यंत्रों का सामना करना पड़ा।

① निजामुल मुल्क और उसके पिता के रिश्ते का भाई मोहम्मद अमीन खाँ
② नमकहराम व विश्वासघाती
③ राजा बनाने वाले

(ज). यद्यपि सैय्यद बंधुओं ने सभी प्रकार के सामंतों से मेल-मिलाप और दोस्ती करने की जोरदार कोशिश की लेकिन निजामुल-मुल्क और उसके पिता के रिश्ते का भाई मुहम्मद अमीन खाँ के नेतृत्व में सामंतों का एक शक्तिशाली गुट उनके खिलाफ षड्यंत्र करने लगा।

निज़ामुल-मुल्क

1722 में वजीर बना

मुहम्मदशाह (1719-1748)

(झ) फर्रुखसियर के गद्दी से हटाए जाने और मार दिए जाने से अनेक सामंत भयभीत हो गए थे। इसके अतिरिक्त बादशाह की हत्या ने दोनों भाइयों के खिलाफ जनता में घृणा की एक लहर पैदा कर दी। लोग उन्हें विश्वासघाती के रूप में देखने लगे और नमकहराम कहने लगे। औरंगजेब के जमाने के अनेक सामंत भी सैय्यद बंधुओं की राजपूत और मराठा सरदारों के साथ दोस्ती तथा हिंदुओं के प्रति उदार नीति को नापसंद करते थे।

① 30 वर्ष का शासनकाल
② 1724 में निजामुल-मुल्क ने पद छोड़कर हैदराबाद चले गये
③ मुगल साम्राज्य का वास्तविक विघटन यहाँ से शुरू होता है।
④ उसका प्रस्थान साम्राज्य से निष्ठा और सद्गुण के पलायन का प्रतीक था

(ञ) सैय्यद बंधुओं के विरोधी सामंतों को बादशाह मुहम्मदशाह का समर्थन मिला। वह दोनों भाइयों के नियंत्रण से अपने को मुक्त करना चाहते थे। वे 1720 में छोटे भाई हुसैन अली खाँ को धोखे से मारने में सफल हो गए। अब्दुल्ला खाँ ने मुकाबला करने की कोशिश की मगर आगरा के पास उसे हरा दिया गया। इस प्रकार मुगल-साम्राज्य पर सैय्यद बंधुओं का आधिपत्य खत्म हो गया जो भारतीय इतिहास में "राजा बनाने वाले" के नाम से जाने जाते हैं।

DR. AFROZE EQBAL
Net, PH-D
Phone No- 09997922069
Free Career Counselling
for Competitive Exams

(ट) मुहम्मदशाह का लगभग 30 साल (1719-1748) लम्बा शासनकाल साम्राज्य को बचाने का आखिरी मौका था, मगर मुहम्मदशाह ऐसा काल पुरुष नहीं था। वह दिमागी तौर पर कमजोर, ओछा और ऐय्याश था। उसने राजकाज पर कोई ध्यान नहीं दिया। निजामुल मुल्क जैसे काबिल वजीरों को अपना पूरा समर्थन देने के बजाय वह भ्रष्ट और नालायक चापलूसों के कुप्रभाव का शिकार बन गया तथा अपने ही मंत्रियों के खिलाफ साजिशें करने लगा। यहाँ तक कि वे अपने कृपा पात्र दरबारियों द्वारा उगाहे गए घूस में हिस्सा लेने लगा।

Scanned with CamScanner

⑥ (ii) निजाम-उल-मुल्क 1722 में वजीर बना था और प्रशासन को सुधारने के लिए उसने जोरदार प्रयास किए थे। उसने अक्तूबर 1724 में अपना ओहदा छोड़ दिया और दक्कन में हैदराबाद रियासत की नींव डालने के लिए दक्षिण चल पड़ा। "उसका प्रस्थान साम्राज्य से निष्ठा और सद्गुण के पलायन का प्रतीक था।" मुगल साम्राज्य का वास्तविक विघटन यहाँ से शुरू हो गया था।

नादिरशाह 1738–39 → मुहम्मदशाह

(i) 1738–39 में नादिर शाह उत्तरी भारत के मैदानों में आ धमका और उसके सामने साम्राज्य ने घुटने टेक दिए।

(ii) नादिरशाह भारत के प्रति उसके अपार धन के कारण आकर्षित हुआ। भारत अपने अपार वैभव के लिए सदा से प्रसिद्ध था। अपने भाड़े की फौज को बनाए रखने के लिए पैसों की उसे सख्त जरूरत थी। भारत से लूटा गया धन इस समस्या का एक हल हो सकता था। साथ ही, मुगल साम्राज्य की प्रत्यक्ष कमजोरी ने इस प्रकार की लूट-खसोट को संभव बना दिया। गुटबाजी के शिकार सामंतों ने दुश्मन को दरवाजे पर खड़ा देखकर भी एक सूत्रबद्ध होने से इंकार कर दिया। वे सुरक्षा की योजना या सुरक्षा फौजों के सेनापति के नाम पर सहमत नहीं हो सके। फूट, अयोग्य नेतृत्व और आपसी द्वेष तथा परस्पर अविश्वास का परिणाम हार के सिवाए और क्या होता।

(iii) दोनों फौजों के बीच 13 फरवरी, 1739 को करनाल में मुकाबला हुआ। बादशाह मुहम्मदशाह को बंदी बना लिया गया और नादिरशाह दिल्ली की ओर बढ़ा। नादिरशाह ने शाही राजधानी के नागरिकों के भयंकर कत्ले-आम का हुक्म दिया। ऐसा उसने अपने कुछ सैनिकों की हत्या का बदला लेने के लिए किया।

(iv) लोभी आक्रमणकारी ने शाही खजाने और शाही संपत्ति को हथिया लिया। अनुमान किया गया है कि उसने कुल मिलाकर 70 करोड़ रुपये का माल लूटा। उसने अपने राज्य में 3 सालों तक बिल्कुल कोई कर नहीं लगाया। प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा तथा शाहजहाँ का रत्नजड़ित मयूर सिंहासन [तख्ते-ताऊस] भी ले गया। उसने मुहम्मदशाह को सिंधु नदी के पश्चिम के साम्राज्य के इलाकों को उसे दे देने के लिए मजबूर किया।

(v) नादिरशाह के आक्रमण ने मुगल साम्राज्य को भारी नुकसान पहुँचाया। मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा अपूरणीय क्षति पहुँची तथा मराठा सरदारों और विदेशी कंपनियों को साम्राज्य की छिपी हुई कमजोरी का पता लग गया।

① नादिरशाह अपार धन के लिए आकर्षित
② फूट, अयोग्य नेतृत्व व आपसी द्वेष तथा परस्पर अविश्वास का परिणाम पराजय के सिवा क्या होता है।
③ 13 फरवरी, 1739 में करनाल
④ कत्ले आम – अपने सैनिकों की हत्या के बदले।
⑤ 70 करोड़ का माल लूट
⑥ अपने राज्यों में 3 वर्ष तक कर नहीं
⑦ प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा शाहजहाँ का तख्ते ताऊस भी ले गया।
⑧ सिंधु नदी के पश्चिम के इलाके ले लिये।
⑨ मराठा सरदारों व विदेशी कंपनियों को साम्राज्य की छिपी हुई कमजोरी का पता लग गया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

(7) (vi) अहमदशाह अब्दाली नादिर शाह के सबसे काबिल सेनापतियों में से एक था। उसने अपने स्वामी के मरने के बाद अफगानिस्तान पर अपनी सत्ता कायम करने में सफलता प्राप्त कर ली थी। अब्दाली ने 1748 से 1767 के बीच उत्तरी भारत, खासकर दिल्ली से मथुरा पर बार-बार आक्रमण और लूट-खसोट किया। उसने 1761 में मराठों को पानीपत की तीसरी लड़ाई में हराया।

अहमदशाह अब्दाली
- ① नादिरशाह के सेनापति
- ② 1748-1767 के बीच उत्तरी भारत, दिल्ली से मथुरा पर बार-बार आक्रमण किया
- ③ 1761 - मराठों को पानीपत की तीसरी लड़ाई में हराया

(vii) नादिरशाह और अब्दाली के आक्रमणों तथा मुगल सामंतशाही के आपसी घातक झगड़ों के कारण 1761 तक मुगल साम्राज्य का अस्तित्व वस्तुतः अखिल भारतीय साम्राज्य के रूप में समाप्त हो गया। यह केवल दिल्ली तक सीमित रह गया।

शाह आलम II

1759
- ① अपने ही वजीर से जान का खतरा
- ② 1764 - बक्सर का युद्ध मीर कासिम - बंगाल, शुजाउद्दौला - अवध
- ③ इलाहाबाद में ईस्ट इंडिया क० का पेंशनयाफ्ता
- ④ 1772 में मराठों के संरक्षण में दिल्ली लौटा
- ⑤ 1803 में दिल्ली पर अंग्रेज का कब्जा
- ⑥ मुगल सम्राट केवल राजनीतिक मोहरा बने रहे। *
- ⑦ मुगल राजतंत्र 1759 के बाद फौजी ताकत नहीं रहा

(viii) (i) शाह आलम द्वितीय 1759 में गद्दी पर बैठा वह आरंभ के सालों में अपनी राजधानी से दूर एक जगह से दूसरी जगह घूमता रहा क्योंकि उसे अपने ही वजीर से जान का खतरा था।

(ii) उसने 1764 में बंगाल के मीर कासिम और अवध के शुजाउद्दौला के साथ मिलकर अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ लड़ाई की घोषणा कर दी। बक्सर की लड़ाई में अंग्रेजों से हार जाने के बाद वह कई वर्षों तक इलाहाबाद में ईस्ट इंडिया कम्पनी का पेंशनयाफ्ता बनकर रहा। वह 1772 में मराठों के संरक्षण में ब्रिटिश आश्रय छोड़कर दिल्ली लौटा।

अंग्रेजों ने 1803 में दिल्ली पर कब्जा कर लिया। तब से लेकर 1857 तक जब मुगल वंश अंतिम रूप से खत्म हो गया, मुगल बादशाह अंग्रेजों के लिए केवल राजनीतिक मोहरा बने रहे।

(i) मुगल राजतंत्र 1759 के बाद फौजी ताकत नहीं रहा तो भी वह इसलिए बना रहा कि भारत की जनता के दिमाग पर देश की राजनीतिक एकता के प्रतीक के रूप में उसका बड़ा प्रभाव था।

(ii) मुगल साम्राज्य के पतन का सबसे महत्वपूर्ण नतीजा यह हुआ कि इसने ब्रिटिश शासकों के लिए भारत विजय का रास्ता आसान कर दिया।

(iii) मुगल साम्राज्य के पतन की सबसे दुखद बात यह हुई कि उसकी जगह पर एक विदेशी शक्ति आई जिसने अपने हितों का ख्याल कर देश के शताब्दियों पुराने सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक ढाँचे की जगह एक औपनिवेशिक ढाँचा स्थापित कर दिया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Seated for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

8

स्वतंत्र राज्य
1) बंगाल
2) अवध
3) हैदराबाद
4) मैसूर
5) मराठा

उत्तराधिकार वाले राज्य
अवध तथा हैदराबाद

मराठा, अफगान, जाट
पंजाब

(i) 18वीं सदी के दौरान मुगल साम्राज्य और उसकी राजनीतिक व्यवस्था के खंडहर पर बड़ी संख्या में स्वतन्त्र और अर्द्ध-स्वतन्त्र शक्तियाँ उठ खड़ी हुई, जैसे बंगाल, अवध, हैदराबाद, मैसूर और मराठा राजशाहि। भारत पर अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए अंग्रेजों को इन्हीं ताकतों पर विजय प्राप्त करनी पड़ी थी।

(ii) इनमें से कुछ राज्यों को "उत्तराधिकार वाले राज्य" कहा जा सकता है जैसे अवध तथा हैदराबाद। मुगल साम्राज्य की केन्द्रीय शक्ति के कमजोर होने पर मुगल प्रांतों के गवर्नरों के स्वतंत्र होने का दावा करने से इन राज्यों का जन्म हुआ।

(iii) दूसरे मराठा, अफगान, जाट तथा पंजाब जैसे राज्यों का जन्म मुगल शासन के खिलाफ स्थानीय सरदारों, जमींदारों तथा किसानों के विद्रोह के कारण हुआ था।

(iv) पहले समूह में आने वाले राज्यों ने उत्तराधिकार के रूप में कार्यविधि मुगल प्रशासनिक ढाँचा और संस्थाओं को प्राप्त किया था। दूसरों ने इनमें अलग-अलग मात्रा में थोड़ा बहुत परिवर्तन करके इस ढाँचे तथा इन संस्थाओं को अपनाया था, जिसमें मुगल शासकों की राजस्व व्यवस्था भी शामिल थी।

(v) आमतौर पर कहा जाता है कि अधिकांश राज्यों में राजनीतिक अधिकारों का विकेंद्रीकरण हो गया तथा सरदारों, जागीरदारों और जमींदारों को इसके कारण राजनीतिक और आर्थिक शक्ति की दृष्टि से लाभ मिला। इन राज्यों की राजनीति लगातार गैर-सांप्रदायिक या धर्मनिरपेक्ष बनी रही क्योंकि इन राज्यों के शासकों की आर्थिक तथा राजनीतिक प्रेरक शक्ति समान थी।

(vi) इस बात का कोई आधार नहीं मिलता है कि मुगल साम्राज्य के पतन और विघटन के बाद भारत के विभिन्न भागों में कानून और व्यवस्था की समस्या उठ खड़ी हुई और चारों ओर अराजकता फैल गई। वास्तविकता तो यह है। 18वीं शताब्दी में प्रशासन तथा अर्थव्यवस्था में जो भी अव्यवस्था विद्यमान थी, वह भारतीय राज्यों के आंतरिक मामलों में ब्रिटिश हस्तक्षेप और ब्रिटेन द्वारा चलाए गए विजय अभियानों का परिणाम थी।

DR. AFROZE EQBAL
Net Ph-D
Phone No- 09097922069
Contact for Free Lecture Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

(vii) 17वीं सदी में जो आर्थिक संकट शुरू हुए थे, उनमें से कोई भी राज्य उनको रोकने में सफल नहीं हो पाया। इनमें से सभी राज्य मूल रूप से कर उगाहने वाले राज्य बने रहे।

(viii) जहाँ इन राज्यों ने आंतरिक व्यापार को ठप नहीं होने दिया बल्कि विदेशों से व्यापार को बढ़ावा देने की कोशिश भी की लेकिन अपने राज्यों के आधारभूत औद्योगिक और वाणिज्यिक ढाँचे को आधुनिक रूप देने के लिए इन लोगों ने कुछ नहीं किया।

हैदराबाद 1724
↓
निजामुल-मुल्क-आसफजाह

1. दक्कन के वायसराय
2. 1722-24 तक वजीर
3. हिंदुओं के प्रति सहनशीलता की नीति
4. एक हिंदू पूरनचंद उसका दीवान था

(a) निजामुल-मुल्क-आसफजाह ने 1724 में हैदराबाद राज्य की स्थापना की। सैयद बंधुओं को गद्दी से हटाने में उसकी अहम भूमिका थी। उसको दक्कन के वायसराय का खिताब प्राप्त हुआ था।

(b) वह 1722-1724 तक साम्राज्य का वजीर रहा। मगर वह जल्द ही वजीर के काम से तंग आ गया क्योंकि बादशाह मुहम्मदशाह ने प्रशासन में सुधार लाने की उसकी सब कोशिशों को नाकाम कर दिया।

अवध

(c) उसने केंद्रीय सरकार से अपनी स्वतंत्रता की खुलेआम घोषणा कभी नहीं की, मगर उसने व्यवहार में स्वतंत्र शासक के रूप में काम किया। उसने दिल्ली की केंद्रीय सरकार से बिना पूछे लड़ाइयाँ लड़ी, सुलह किये, खिताब बाँटे और जागीरें तथा ओहदे दिये। उसने हिंदुओं के प्रति सहनशीलता की नीति अपनाई। उदाहरण के लिए एक हिंदू पूरनचंद उसका दीवान था। उसने दक्कन में मुगलों के नमूने पर जागीरदारी प्रथा चला कर सुव्यवस्थित प्रशासन स्थापित कर अपनी सत्ता को मजबूत बनाया।

हैदराबाद
↓
कर्नाटक
↓
सआदतउल्ला खाँ
↓
दोस्त अली

(d) (i) कर्नाटक मुगल दक्कन का एक सूबा था और इसतरह हैदराबाद के निजाम के अधिकार के अंतर्गत आता था। मगर व्यवहार में कर्नाटक का नायब सूबेदार, जिसे कर्नाटक का नवाब कहा जाता था, अपने को दक्कन के नवाब के नियंत्रण से मुक्त कर अपने ओहदे को वंशगत बना चुका था।

(ii) कर्नाटक के नवाब सआदतउल्ला खाँ ने अपने भतीजे दोस्त अली को निजाम की मंजूरी के बिना ही अपना उत्तराधिकारी बना दिया था। आगे चलकर 1740 के बाद कर्नाटक की स्थिति नवाबी के लिए बारंबार संघर्षों के कारण बिगड़ी और इससे यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों को

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997522069
Centre for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

10

भारतीय राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप करने का मौका मिल गया।

(बंगाल) ①

बंगाल + मुर्शिद कुली खाँ व अली वर्दी खाँ

1717 बंगाल का सूबेदार

तीन विद्रोह

(1) सीताराम राय, उदयनारायण व गुलाम मुहम्मद

(2) शुजात खाँ

(3) नजात खाँ

रामजीवन को जमींदारी दी।

सरफराज खाँ 1727 + अलीवर्दी खाँ

इजारा

(1) मुर्शिद कुली खाँ ने शुरू किया

(2) तकावी ऋण

अलीवर्दी खाँ

(1) अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों को कलकत्ता एवं चंद्रनगर के अपने कारखानों की किलेबंदी की इजाजत नहीं दी।

(a) मुर्शिद कुली खाँ और अलीवर्दी खाँ, ने बंगाल को वस्तुतः स्वतंत्र बना दिया। मुर्शिद कुली खाँ को 1717 में जाकर बंगाल का सूबेदार बनाया गया, मगर वह उसका वास्तविक शासक 1700 से ही था जब उसे दीवान बनाया गया था। उसने अपने को तुरंत केंद्रीय नियंत्रण से मुक्त कर लिया यद्यपि वह बादशाह को नियमित रूप से नजराने की काफी बड़ी रकम भेजता रहा।

(b) उसके शासन के दौरान केवल तीन विद्रोह हुए। पहला विद्रोह सीताराम राय उदय नारायण और गुलाम मुहम्मद ने किया। उसके बाद शुजात खाँ ने बगावत की। अंतिम विद्रोह नजात खाँ का था। उनको हराने के बाद मुर्शिद कुली खाँ ने उनकी जमींदारियाँ अपने कृपापात्र रामजीवन को दे दी।

(c) मुर्शिद कुली खाँ 1727 में मर गया। उसके बाद उसके जगह पर उसका बेटा सरफराज खाँ आया जिसे उसी साल गद्दी से हटाकर अलीवर्दी खाँ नवाब बन गया।

(d) मुर्शिद कुली खाँ ने प्रशासन में मितव्ययिता बरती। उसने बंगाल के वित्तीय मामलों का प्रबंध नए सिरे से किया। उसने नए भू-राजस्व बंदोबस्त के जरिए जागीर भूमि के एक बड़े भाग को खालसा भूमि बना दिया और "इजारा" व्यवस्था (ठेके पर भू राजस्व वसूल करने की व्यवस्था) आरंभ की। उसने गरीब खेतिहरों का कष्ट दूर करने तथा उन्हें समय पर भू-राजस्व देने में समर्थ बनाने के लिए तकावी ऋण भी दिए।

(e) मुर्शिद कुली खाँ और उसके बाद के नवाबों ने हिंदुओं और मुसलमानों को रोजगार के समान अवसर दिए। उन्होंने सबसे ऊँचे नागरिक ओहदों और कई फौजी ओहदों पर बंगालियों को रखा, जिनमें अधिकतर हिंदू थे। इजारेदारों को चुनते समय मुर्शिद कुली खाँ ने स्थानीय जमींदारों और महाजनों को प्राथमिकता दी जिनमें अनेक हिंदू थे।

(f) अलीवर्दी खाँ ने अंग्रेजों और फ्रांसीसियों को कलकत्ता और चंद्रनगर के अपने कारखानों की किलेबंदी करने की इजाजत नहीं दी।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09097922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

1707 (11)

① अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रवृत्ति 1707 के बाद अपनी मांगों को मनवाने के लिए सैनिक- शक्ति का इस्तेमाल

(i) अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रवृत्ति 1707 के बाद अपनी मांगों को मनवाने के लिए सैनिक शक्ति का इस्तेमाल करने या उसके इस्तेमाल की धमकी देने लगी थी। नवाबों ने इस प्रवृत्ति को मजबूती से नहीं दबाया। वे कंपनी के धमकियों का जवाब देने की ताकत रखते थे, मगर उनका निरंतर यह विश्वास रहा कि कोई भी मात्र व्यापारिक कंपनी उनकी सत्ता के लिए कोई खतरा पैदा नहीं कर सकती।

(ii) बंगाल के नवाबों ने शक्तिशाली फौज बनाने की ओर ध्यान नहीं दिया और इसके लिए उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी। उदाहरण के लिए मुर्शीद कुली खाँ की फौज में केवल 2,000 घुड़सवार और 4000 पैदल सैनिक थे।

(iii) अलीवर्दी खाँ को मराठों के बारंबार हमलों से तंग होना पड़ा और अंततोगत्वा उसे उड़ीसा का एक बड़ा हिस्सा उन्हें दे देना पड़ा।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997522069
[Institute] for Free Career Counselling
for Competitive Exams

अवध

सआदत खाँ

① 1722 में सूबेदार
② नया राजस्व बंदोबस्त - 1723
③ 1739 में मरने से पहले स्वतंत्र

(i) अवध के स्वायत्त राज्य का संस्थापक सआदत खाँ बुरहानुल मुल्क था। उसे 1722 में अवध का सूबेदार बनाया गया था। उसने अव्यवस्था को खत्म किया और बड़े जमींदारों को अनुशासित किया।

(ii) सआदत खाँ ने भी 1723 में नया राजस्व-बंदोबस्त (रेवेन्यू सेटलमेंट) किया। कहा जाता है कि उचित भू-लगान लगाकर तथा बड़े जमींदारों के जुल्मों से बचाकर उसने किसानों की हालत को बेहतर बनाया।

(iii) उसने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कोई भेदभाव नहीं किया। उसके अनेक सेनापति और उच्च अधिकारी हिंदू थे।

सफदरजंग

① 1748 में वजीर
② इलाहाबाद का भी प्रांत
③ बंगश नवाबों के खिलाफ 1750-51 की लड़ाई में उसने मराठों की सैनिक सहायता तथा जाटों का समर्थन प्राप्त किया
④ पेशवा से करार किया मगर पेशवा दिल्ली में सफदरजंग के दुश्मनों से मिला, जिन्होंने उसे अवध और इलाहाबाद का सूबेदार बनाने का वचन दिया
⑤ उसकी सरकार के सबसे बड़े ओहदे पर एक हिंदू महाराजा नवाब राय आसीन था

(iv) वर्ष 1739 में अपने मरने के पहले वह वस्तुतः स्वतंत्र बन गया था और अपने प्रांत को अपनी वंशगत जायदाद बना लिया था। उसकी जगह उसके भतीजे सफदरजंग ने ली। वह साथ ही, 1748 में साम्राज्य का वजीर भी बना दिया गया। इसके अलावा उसे इलाहाबाद का प्रांत भी दिया गया।

(v) सफदरजंग ने 1754 में अपने मरने तक अवध और इलाहाबाद की जनता को किसी अशांति का सामना करने नहीं दिया। उसने मराठा सरदारों से मित्रता कर ली, जिससे उसके अधिकार क्षेत्र में उनकी घुसपैठ न हो सके। बंगश नवाबों के खिलाफ 1750-51 की लड़ाई में उसने मराठों की सैनिक सहायता तथा जाटों का समर्थन प्राप्त किया।

(vi) उसने पेशवा के साथ एक करार किया, जिसके अनुसार पेशवा ने मुगल साम्राज्य को अहमदशाह अब्दाली के खिलाफ मदद देने और उसे भारतीय पठानों तथा राजपूत राजाओं जैसे अंदरूनी विद्रोहियों से बचाने का वचन दिया। बदले में पेशवा को 50 लाख रुपये तथा पंजाब, सिंध और उत्तर भारत के कई जिलों की चौथ दिया जाने वाला था। इसके अलावा पेशवा को अजमेर और आगरा का सूबेदार बनाया जाना था। मगर पेशवा दिल्ली में सफदरजंग के दुश्मनों से मिला, जिन्होंने उसे अवध और इलाहाबाद का सूबेदार बनाने का वचन दिया। इसलिए करार टूट गया।

Scanned with CamScanner

(12)

(vii) सफदरजंग ने न्याय की उचित व्यवस्था की। उसने भी नौकरियाँ देने में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच निष्पक्षता की नीति अपनाई। उसकी सरकार के सबसे बड़े ओहदे पर एक हिन्दू, महाराजा नवाब राय आसीन था।

लखनऊ

① अवध का महत्वपूर्ण शहर
② कला एवं साहित्य की दृष्टि से दिल्ली का प्रतिद्वंदी

(viii) लखनऊ बहुत जमाने से अवध का एक महत्वपूर्ण शहर था। 1775 के बाद वह अवध के नवाबों का निवास स्थान बन गया। तुरन्त ही कला और साहित्य को संरक्षण प्रदान करने की दृष्टि से दिल्ली का प्रतिद्वंद्वी बन गया। वह हस्त शिल्प के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में भी विकसित हुआ।

(ix) सफदरजंग ने बहुत ऊँची वैयक्तिक नैतिकता बनाए रखी। वह जिंदगी भर अपनी एकमात्र पत्नी के प्रति वफादार रहा। असल में हैदराबाद, बंगाल और अवध के तीनों स्वायत्त रजवाड़ों के संस्थापक क्रमशः निजामुल-मुल्क, मुर्शीद कुली खाँ और अली वर्दी खाँ ऊँची वैयक्तिक नैतिकता वाले लोग थे। उनमें से लगभग सबों ने संयमपूर्ण और सादा जीवन बिताया। केवल अपने सार्वजनिक और राजनीतिक व्यवहार में ही उन्होंने धोखाधड़ी षड्यंत्र और विश्वासघात का सहारा लिया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling for Competitive Exams

मैसूर
↓
हैदर अली

① चिक्का कृष्णराज
नंजराज (सर्वाधिकारी)
देवराज [दुलवई]
② हैदर अली का जन्म 1721 में सामान्य परिवार
③ 1755 - डिंडीगुल - आधुनिक शास्त्रागार
④ 1761 - नंजराज को सत्ता से हटाया
⑤ बिदनूर, सुंदा, सेरा, कन्नड व मालाबार को जीत लिया
मालाबार — भारतीय समुद्रतट पर पहुँच
⑥ द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध - 1782 में मृत्यु

(a) दक्षिण भारत में हैदराबाद के पास हैदर अली के अधीन जिस सबसे महत्वपूर्ण सत्ता का उदय हुआ था वह मैसूर था।

(b) 18 वीं सदी के शुरू के नंजराज (सर्वाधिकारी) और देवराज (दुलवई) नाम के दो मंत्रियों ने मैसूर की शक्ति अपने हाथों में ले रखी थी, इस प्रकार वहाँ के राजा चिक्का कृष्णराज को उन्होंने कठपुतली में बदल दिया था।

(c) हैदर अली का जन्म 1721 में एक अत्यंत सामान्य परिवार में हुआ था। उसने अपना जीवन मैसूर की सेना में एकदम साधारण अधिकारी के रूप में शुरू किया था। वह शिक्षित तो नहीं था, लेकिन कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभा का धनी था, अत्यंत पराक्रमी और लगनशील था, साहसी और दृढ़ निश्चयी था।

(d) वर्ष 1755 में डिंडीगुल में उसने एक आधुनिक शस्त्रागार स्थापित किया। इसमें उसने फ्रांसीसी विशेषज्ञों की मदद ली। वर्ष 1761 में उसने नंजराज को सत्ता से अलग कर दिया तथा मैसूर राज्य पर अपना अधिकार कायम कर लिया। योद्धा सरदारों और जमींदारों के विद्रोहों को उसने नियंत्रित कर लिया था तथा बिदनूर, सुंदा, सेरा, कन्नड और मालाबार के इलाकों को जीत लिया। मालाबार को अपने अधीन करने का मूल कारण यह था कि वह भारतीय समुद्रतट तक अपनी पहुँच बनाए रखना चाहता था।

Scanned with CamScanner

(13)

(e) अपने राज्य में मुगल शासन प्रणाली तथा राजस्व व्यवस्था उसी ने लागू की थी। वह धार्मिक सहिष्णुता की नीति पर चला। उसका पहला दीवान और अन्य अनेक अधिकारी हिंदू थे।

टीपू सुल्तान

① समय के साथ बदलने की इच्छा
② नए कैलेंडर, सिक्का ढलाई माप-तौल के नए पैमाने
③ स्वतंत्रता वृक्ष - श्रीरंगपट्टम में फ्रांसीसी क्रांति में गहरी दिलचस्पी
④ $\frac{1}{3}$ - भू-राजस्व
⑤ आधुनिक नौसेना
⑥ दो नौका घाट

(f) उसने 1769 में अंग्रेजी फौजों को बार-बार हराया और मद्रास के पास तक पहुँच गया। वह द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान 1782 में मर गया। उसके स्थान पर उसका बेटा टीपू गद्दी पर बैठा।

(g) अंग्रेजों के हाथों 1799 में मारे जाने तक टीपू सुल्तान ने मैसूर पर शासन किया। समय के साथ अपने को बदलने की इच्छा के प्रतीक थे - एक नए कलेंडर को लागू करना, सिक्का-ढलाई की नई प्रणाली काम में लेना तथा माप-तौल के नए पैमानों को अपनाना। उसके निजी पुस्तकालय में धर्म, इतिहास, सैन्य विज्ञान, औषधि विज्ञान और गणित जैसे विविध विषयों की पुस्तकें थी।

(h) उसने फ्रांसीसी क्रांति में गहरी दिलचस्पी ली। उसने श्रीरंगपट्टम में "स्वतंत्रता वृक्ष" लगाया और जैकोबिन क्लब का सदस्य बन गया।

(i) उसके सैनिक अंत तक अनुशासित और उसके प्रति वफादार रहे। उसने जागीर देने की प्रथा को खत्म करके राजकीय आय बढ़ाने की कोशिश की। उसने पोलिगारों की पैतृक संपत्ति को कम करने और राज तथा किसानों के बीच के मध्यस्थों को समाप्त करने की भी कोशिश की। वह पैदावार का एक-तिहाई हिस्सा तक भू-राजस्व के रूप में लेता था।

(j) उसकी पैदल सेना यूरोप की शैली में बंदूकों और संगीनों से लैस थी लेकिन इन हथियारों को मैसूर में ही बनाया गया था। वर्ष 1796 के बाद उसने एक आधुनिक नौसेना खड़ी करने की भी कोशिश की थी। इसके लिए उसने दो नौका घाट बनवाए थे तथा जहाजों के नमूने उसने स्वयं तैयार कराए थे।

(k) उसकी यह अत्यंत प्रिय उक्ति थी "एक शेर की तरह एक दिन जीना बेहतर है लेकिन भेड़ की तरह लंबी जिंदगी जीना अच्छा नहीं" इसी विश्वास का पालन करते हुए वह श्रीरंगपट्टम के द्वार पर लड़ता हुआ मरा था। लेकिन हर काम में वह जल्दबाजी करता था और उसका स्वभाव स्थिर नहीं था।

(l) वर्ष 1799 में ब्रिटिश लोगों ने जब टीपू को पराजित कर मार डाला और मैसूर पर कब्जा कर लिया तो यह देखकर उनको आश्चर्य हुआ कि मैसूर का किसान ब्रिटिश शासित राज्य मद्रास के किसान की तुलना में कहीं बहुत अधिक संपन्न और खुशहाल था।

DR. AFROZE EQBAL
Net Ph-D
Phone No- 09997322069
Contact For Free Career Counselling for Competitive Exams.

Scanned with CamScanner

शोर (iv) सर जॉन शोर 1793–98 के दौरान गवर्नर-जनरल था। उसने बाद में लिखा था " टीपू के राज्य के किसानों को संरक्षण मिलता था तथा उसको श्रम के लिए प्रोत्साहित और पुरस्कृत किया जाता था।"

(14)

DR. AFROZE EQBAL
Phone No- 09...
Guidance for Free ... Competitive Exams

(v) आधुनिक व्यापार और उद्योग के महत्व को भी टीपू अच्छी तरह समझता था। वास्तव में भारतीय शासकों में वही एकमात्र शासक था जो आर्थिक शक्ति के महत्व को सैनिक शक्ति की नींव मानता था। भारत में आधुनिक उद्योगों की शुरुआत के लिए उसने थोड़े-बहुत प्रयास किये। इसके लिए उसने विदेशों से कारीगर बुलाए और कई उद्योगों को राज्य की ओर से सहायता दी। विदेश व्यापार के विकास के लिए उसने फ्रांस, तुर्की, ईरान और पेगू में दूत भेजे। चीन के साथ भी उसने व्यापार किया। यूरोपीय कंपनियों के ढाँचे पर उसने व्यापारिक कंपनी स्थापित करने का भी प्रयास किया और उनकी वाणिज्य संबंधी गतिविधियों की नकल करने की कोशिश की। बंदरगाह वाले नगरों में व्यापारिक संस्थाएँ स्थापित करके उसने रूस तथा अरब के साथ व्यापार बढ़ाने का प्रयास किया।

टीपू
① शृंगेरी के शारदा मंदिर
② रंगनाथ का प्रसिद्ध मंदिर

(vi) टीपू यद्यपि अपने धार्मिक दृष्टिकोण में काफी रूढ़िवादी था लेकिन दूसरे धर्मों के प्रति उसका दृष्टिकोण काफी सहिष्णु और उदार था। वर्ष 1791 में मराठा घुड़सवारों ने शृंगेरी के शारदा मंदिर को लूटा तो उसने माँ शारदा की प्रतिमा बनवाने के लिए पैसे दिए। वह नियमित रूप से इस मंदिर और इसके साथ कुछ और मंदिरों को भेंट दिया करता था। रंगनाथ का प्रसिद्ध मंदिर उसके महल से मुश्किल से 100 गज की दूरी पर था।

केरल
(1) कालीकट
(2) चिरक्कल
(3) कोचीन
(4) त्रावणकोर

(i) अठारहवीं सदी के शुरु में केरल बहुत बड़ी संख्या में सामंत सरदारों और राजाओं में बँटा हुआ था, इनमें चार प्रमुख राज्य इस प्रकार थे:— (1) कालीकट (2) चिरक्कल (3) कोचीन व (4) त्रावणकोर।

त्रावणकोर
राजा मार्तंड वर्मा
① डच को हराया
② आधुनिक शस्त्रागार

(ii) त्रावणकोर राज्य को 1729 के बाद अठारहवीं सदी के एक अग्रणी राजनेता राजा मार्तंड वर्मा के नेतृत्व में प्रमुखता मिली। उसने डच लोगों को हराकर केरल में उनकी राजनीतिक सत्ता खत्म कर दी। उसने यूरोपीय अफसरों मॉडल के आधार पर एक शक्तिशाली फौज का संगठन किया और उसे आधुनिक हथियारों से सुसज्जित किया। उसने एक आधुनिक शस्त्रागार भी बनवाया। उसने सिंचाई की अनेक व्यवस्थाएँ कीं, संचार के लिए सड़कें और नहरें बनाईं तथा विदेश व्यापार को सक्रिय प्रोत्साहन दिया।

हैदर अली
उत्तरी केरल को जीता

(iii) हैदर अली ने केरल पर अपना आक्रमण 1766 में शुरु किया और अंत में कालीकट के जमोरिन के इलाके सहित कोचीन तक उत्तरी केरल को हड़प लिया।

15

मलयाली साहित्य
↓
18वीं सदी में

(ए) अठारहवीं सदी में मलयाली साहित्य में एक असाधारण पुनर्जीवन देखा गया। यह अंशतः केरल के राजाओं और सरदारों के कारण हुआ जो साहित्य के महान संरक्षक थे।

त्रिवेंदरम
① त्रिवेंदरम — संस्कृत का केन्द्र
② मार्तंड वर्मा → राम वर्मा — कवि, विद्वान

(v) अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में त्रावणकोर की राजधानी त्रिवेंदरम संस्कृत विद्वता का एक प्रसिद्ध केंद्र बन गया। मार्तंड वर्मा का उत्तराधिकारी राम वर्मा स्वयं कवि, विद्वान, संगीतज्ञ, प्रसिद्ध अभिनेता और सुसंस्कृत व्यक्ति था। वह अंग्रेजी में धाराप्रवाह बातचीत करता था। उसने यूरोप के मामलों में गहरी दिलचस्पी ली। वह लंदन, कलकत्ता, मद्रास से निकलने वाले अखबारों और पत्रिकाओं को नियमित रूप से पढ़ता था।

सवाई जय सिंह
↓
आमेर
① जयपुर का निर्माण
② विज्ञान प्रेमी
③ सुधारक
④ खगोलशास्त्री
⑤ दिल्ली, जयपुर, मथुरा, उज्जैन में पर्यवेक्षणशालाएँ
⑥ सारणियों का सेट — जिज मुहम्मदशाही
⑦ युक्लिड की रेखागणित के तत्व
⑧ नेपियर की रचना का अनुवाद संस्कृत में
⑨ लड़कियों की शादी में कम खर्च
⑩ 44 वर्षों का शासन

(a) अठारहवीं सदी का सबसे श्रेष्ठ राजपूत शासक आमेर का सवाई जय सिंह (1681–1743) था। वह एक विख्यात राजनेता, कानून निर्माता और सुधारक था परन्तु सबसे अधिक वह विज्ञान-प्रेमी के रूप में चमका। उसने जाटों से लिए गए इलाके में जयपुर शहर की स्थापना की। और उसे विज्ञान और कला का महान केंद्र बना दिया। जयपुर का निर्माण बिल्कुल वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर और एक नियमित योजना के तहत हुआ। उसकी चौड़ी सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं।

(b) जयसिंह की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह एक महान खगोलशास्त्री भी था। उसने (1) दिल्ली (2) जयपुर (3) उज्जैन व (4) मथुरा में बिल्कुल सही व आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित पर्यवेक्षणशालाएँ बनाईं। कुछ उपकरण खुद जयसिंह के बनाए हुए थे।

(c) उसने सारणियों का एक सेट तैयार किया, जिससे लोगों को खगोलशास्त्र संबंधी पर्यवेक्षण करने में सहायता मिली। इसका नाम जिज मुहम्मदशाही था। उसने "युक्लिड की रेखागणित के तत्व" तथा त्रिकोणमिति की बहुत सारी कृतियों और लघुगणकों को बनाने और उनके इस्तेमाल संबंधी नेपियर की रचना का अनुवाद संस्कृत में कराया।

(d) जयसिंह समाज-सुधारक भी था। उसने एक कानून लागू करने की कोशिश की, जिससे लड़की की शादी में किसी राजपूत को अधिक खर्च करने के लिए मजबूर न होना पड़े। असाधारण राजा ने जयपुर पर 1699–1743 तक 44 वर्षों तक शासन किया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Institute for Free Career Counselling for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

चूरामन व बदन सिंह (16)

(ii) खेतिहरों की एक जाति जाट है। जाट दिल्ली, आगरा और मथुरा के इर्द-गिर्द के इलाके में रहते थे। मथुरा के आसपास जाट किसानों ने 1669 और फिर 1688 में अपने जाट जमींदारों के नेतृत्व में विद्रोह किए।

(iii) औरंगजेब की मौत के बाद उन्होंने दिल्ली के चारों ओर अशांति पैदा कर दी। जाट विद्रोह जमींदारों के नेतृत्व में मूलतः कृषक विद्रोह था। मगर जल्द ही वह लूटमार तक सीमित हो गया। उन्होंने गरीब हो या धनी, जागीरदार हो या किसान, हिंदू हो या मुसलमान, सबको लूटा। उन्होंने दिल्ली के दरबारी षड्यंत्रों में सक्रिय हिस्सा लिया। बहुधा अपने फायदे को देखते हुए वे पक्ष बदल देते थे।

① कृषक विद्रोह
② लूट-मार
③ जाट जाति का अफलातून— सूरजमल

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Banfed [?] for Free Career Counselling
for Competitive Exams

(iv) भरतपुर के जाट राज्य की स्थापना चूरामन व बदन सिंह ने की। जाट सत्ता सूरजमल के नेतृत्व में अपनी उच्चतम गरिमा पर पहुँच गई। सूरजमल ने 1756–1763 तक शासन किया। उसने अपना अधिकार एक बड़े क्षेत्र पर कायम किया जो पूरब में गंगा से लेकर दक्षिण में चंबल तथा पश्चिम में आगरा के सूबे से लेकर उत्तर में दिल्ली के सूबे तक फैला था। उसके राज्य में अन्य जिलों के अलावा आगरा, मथुरा, मेरठ और अलीगढ़ जिले शामिल थे। एक समसामयिक इतिहास [?] ने उनके बारे में लिखा है :— "यद्यपि वह किसान की पोशाक पहनता था और सिर्फ अपनी ब्रज बोली बोल सकता था, तथापि वह जाट जाति का अफलातून (प्लेटो) था।"

फर्रुखाबाद के इर्द-गिर्द → मुहम्मद खाँ बंगश

(v) एक अफगान दुस्साहसी मुहम्मद खाँ बंगश ने फर्रुखाबाद के इर्द-गिर्द के इलाके (अलीगढ़ और कानपुर के बीच के इलाके) पर फर्रुखसियर और मुहम्मदशाह के शासनकाल में अपना अधिकार कायम कर लिया।

रूहेलखंड → अली मुहम्मद खाँ

① राजधानी पहले आँवला — बाद में रामपुर

(vi) इसी प्रकार, नादिरशाह के आक्रमण के बाद प्रशासन के ठप हो जाने पर अली मुहम्मद खाँ ने रुहेलखंड नामक राज्य कायम किया। यह राज्य हिमालय की तराई में दक्षिण में गंगा और उत्तर में कुमायूँ की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। इसकी राजधानी पहले बरेली में आँवला थी और बाद में रामपुर चली गई। रूहेलों का अवध, दिल्ली और जाटों से लगातार टकराव होता रहा।

Scanned with CamScanner

17

(i) सिख धर्म को गुरु नानक ने 15वीं शताब्दी में चलाया। यह पंजाब के जाट किसानों तथा अन्य छोटी जातियों के बीच फैल गया। लड़ाकू समुदाय के रूप में सिखों को बदलने का काम गुरु हर गोविन्द (1606–1645) ने आरंभ किया। मगर अपने दसवें और आखिरी गुरु गोविंद सिंह (1666–1708) के नेतृत्व में सिख एक राजनीतिक और फौजी ताकत बने

(ii) गुरु गोविंद सिंह की मृत्यु के बाद गुरु की परंपरा खत्म हो गई और सिखों का नेतृत्व उनके विश्वासपात्र शिष्य बंदा सिंह के हाथों में चला गया, जो बंदा बहादुर के नाम से विख्यात था। मुगल फौज के खिलाफ 8 साल तक जोश–खरोश के साथ गैर-बराबरी की लड़ाई चलाई। उसे 1715 में पकड़ लिया गया और कत्ल कर दिया गया।

(iii) उसकी असफलता के अनेक कारण थे: मुगल शासन अभी भी काफी शक्तिशाली था। पंजाब के संपन्न वर्ग और ऊँची जातियों के लोगों ने उसके विरोधियों का साथ दिया क्योंकि वह नीची जातियों और गाँव की गरीब जनता का हिमायती था। अपनी धार्मिक कट्टरता के कारण वह मुगल विरोधी समस्त ताकतों को एकजुट नहीं कर सका।

(iv) नादिरशाह और अहमदशाह के आक्रमणों और उनके कारण पंजाब के प्रशासन में हुई गड़बड़ी ने सिखों को फिर से उठ खड़ा होने का मौका दिया। उन्होंने 1765 – 1800 के बीच पंजाब और जम्मू को अपने अधिकार में कर लिया। सिख 12 मिसलों या संघों में संगठित थे जो सूबे के विभिन्न भागों में काम करते थे। यह मिसल एक-दूसरे के साथ पूरी तरह सहयोग करते थे। मूलतः वे समानता के सिद्धांत पर आधारित थे।

रणजीत सिंह

1799 – लाहौर
1802 – अमृतसर } कब्जा
लाहौर – तोप बनाने के कारखाने

(a) अठारहवीं सदी के अंत में सुकेरचकिया मिसल के प्रधान रणजीत सिंह ने प्रमुखता प्राप्त कर ली। उसने 1799 में लाहौर और 1802 में अमृतसर पर कब्जा कर लिया। उसने सतलज के पश्चिम के सभी सिख प्रधानों को अपने अधीन कर लिया और पंजाब में अपना राज्य कायम किया। बाद में उसने कश्मीर, पेशावर और मुल्तान को भी जीत लिया। उसने मुगलों द्वारा लागू की गई भू-राजस्व की व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं किये। भू-राजस्व का हिसाब प्रतिशत सकल उत्पादन के आधार पर लगाया गया।

(b) रणजीत सिंह ने यूरोपीय प्रशिक्षकों की सहायता से यूरोपीय ढर्रे पर एक शक्तिशाली और सुसज्जित फौज तैयार किया। उसने गोरखों, बिहारियों, उड़ियों, पठानों, डोगरों तथा पंजाबी मुसलमानों को भी अपनी फौज में भर्ती किया। उसने लाहौर में तोपें बनाने के आधुनिक कारखाने खोले तथा उनमें मुसलमान तोपचियों को काम पर लगाया। कहा जाता है कि उसकी फौज एशिया की दूसरी सबसे अच्छी फौज थी। पहला स्थान अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी की फौज का था।

DR. AFROZ
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Centre for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

18

(c) धर्म के मामले में वह सहनशील तथा उदारवादी था। न केवल सिख बल्कि मुसलमान तथा हिंदू संतों को भी वह सम्मान, आदर और संरक्षण देता था। धर्मपरायण सिख होते हुए भी यह कहा जाता है कि "वह अपने सिंहासन से उतरकर मुसलमान फकीरों के पैरों की धूल अपनी लंबी सफेद दाढ़ी से झाड़ता था।" उसके अनेक महत्वपूर्ण मंत्री और सेनापति मुसलमान और हिंदू थे। उसका सबसे प्रमुख और विश्वासपात्र मंत्री फकीर अजीजउद्दीन था। उसका वित्त मंत्री दीवान दीनानाथ था।

(d) जब 1809 में अंग्रेजों ने रणजीत सिंह को सतलज पार करने से मना कर दिया और नदी के पूरब के सिख राज्यों को अपने संरक्षण में ले लिया तब उसने चुप्पी साध ली क्योंकि उसने महसूस किया कि उसके पास अंग्रेजों का मुकाबला करने की शक्ति नहीं है।

(i) पतनोन्मुख मुगल सत्ता को सबसे महत्वपूर्ण चुनौती मराठा राज्य से मिली जो उत्तराधिकारी राज्यों में सबसे शक्तिशाली था। असल में मुगल साम्राज्य के विघटन से उत्पन्न राजनीतिक रिक्तता को भरने की शक्ति केवल उसी में थी। मगर मराठा सरदारों में एकता नहीं थी, और उनमें एक अखिल भारतीय साम्राज्य बनाने के लिए आवश्यक दृष्टिकोण और कार्यक्रम नहीं था। इसलिए वह मुगलों की जगह लेने में असफल रहे।

शिवाजी के पोते साहू

बालाजी विश्वनाथ
+
पेशवा आधिपत्य का दूसरा काल

बाजीराव प्रथम

(ii) शिवाजी के पोते साहू को औरंगजेब ने 1689 से कैद कर रखा था। औरंगजेब उसके तथा उसकी माँ के साथ उनके धर्म, जाति तथा अन्य चीजों का पूरी तरह ख्याल कर बड़ी शिष्टता, इज्जत तथा लिहाज के साथ पेश आया।

(iii) साहू को 1707 में औरंगजेब की मौत के बाद रिहा कर दिया गया, फिर जल्द ही साहू और कोल्हापुर में रहने वाली उसकी चाची ताराबाई के बीच गृह-युद्ध छिड़ गया। ताराबाई ने अपने पति राजाराम के मरने के बाद अपने बेटे शिवाजी द्वितीय के नाम से मुगल विरोधी संघर्ष 1700 से चला रखा था।

(iv) साहू और कोल्हापुर स्थित उसके प्रतिद्वंद्वी के बीच झगड़े के फलस्वरूप मराठा सरकार की एक नई व्यवस्था ने जन्म लिया जिसका नेता राजा साहू का पेशवा बालाजी विश्वनाथ था। इस परिवर्तन के साथ मराठा इतिहास में पेशवा आधिपत्य का दूसरा काल आरंभ हुआ जिसमें मराठा राज्य एक साम्राज्य के रूप में बदल गया।

(v) बालाजी विश्वनाथ ब्राह्मण था। उसने अपना जीवन एक छोटे राजस्व अधिकारी के रूप में आरंभ किया था और धीरे-धीरे बढ़कर एक बड़ा अधिकारी हो गया था। साहू ने 1713 में उसे पेशवा या मुख्य प्रधान बनाया। बालाजी विश्वनाथ ने धीरे-धीरे साहू का और अपना आधिपत्य मराठा सरदारों और अधिकांश महाराष्ट्र पर कायम किया, केवल कोल्हापुर के दक्षिण के इलाके पर राजाराम के वंशजों का शासन रहा। वस्तुतः वह और उसका बेटा बाजीराव प्रथम ने पेशवा को मराठा साम्राज्य का कार्यकारी प्रधान बना दिया।

DR. AFROZE EQBAL
Net Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

(vi) बालाजी विश्वनाथ दक्कन की चौथ और सरदेशमुखी देने के लिए जुल्फिकार खाँ को राजी कर लिया। अंत में उसने सैयद बंधुओं के साथ एक समझौते पर दस्तखत किए। वे सारे इलाके जो पहले शिवाजी के राज्य के हिस्से थे, साहू को वापस कर दिए। उसे दक्कन की 6 सूबों की चौथ सरदेशमुखी भी दे दिया गया। बदले में साहू बादशाह की सेवा में 15,000 घुड़सवार सैनिकों को देने, दक्कन में बगावत और लूटमार रोकने तथा 10 लाख रुपयों का सालाना नजराना पेश करने पर राजी हो गया।

(vii) वह 1714 में औरंगजेब के मकबरे तक पैदल चलकर खुलदाबाद गया तथा उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया। अपने नेतृत्व में एक मराठा फौज लेकर बालाजी विश्वनाथ 1719 में सैयद हुसैन अली खाँ के साथ दिल्ली गया और फर्रुखसियर का तख्ता पलटने में सैयद बन्धुओं की मदद की।

(viii) बालाजी विश्वनाथ 1720 में मर गया। उसकी जगह पर उसका 20 वर्ष का बेटा बाजीराव प्रथम पेशवा बना। उसे "शिवाजी के बाद गुरिल्ला युद्ध का सबसे बड़ा प्रतिपादक" कहा गया है।

(ix) जब 1740 में बाजीराव मरा तब तक मराठों ने मालवा, गुजरात और बुंदेलखण्ड के हिस्सों पर अधिकार कर लिया था। इसी काल में मराठों के गायकवाड़, होल्कर, सिंधिया और भोंसले परिवारों ने प्रमुखता प्राप्त की।

(x) जीवन भर बाजीराव ने दक्कन में निजाम-उल-मुल्क की शक्ति को नियंत्रित करने की कोशिश की, दो बार दोनों लड़ाई के मैदान में मिले और दोनों बार निजाम को मुँह की खानी पड़ी और उसे दक्कन प्रांतों की चौथ और सरदेशमुखी मराठों को देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

(xi) बाजीराव ने 1733 में जंजीरा के सिद्दियों के खिलाफ एक लंबा शक्तिशाली अभियान आरंभ किया और अंततोगत्वा उन्हें मुख्य भूमि से निकाल बाहर कर दिया गया। साथ ही पुर्तगालियों के खिलाफ भी अंत में सिलसिट और बसई (बकसीन) पर कब्जा कर लिया गया मगर पश्चिमी तट पर पुर्तगालियों का अपने इलाकों पर कब्जा बना रहा।

(xii) 20 सालों की छोटी अवधि में ही उसने मराठा राज्य का चरित्र बदल दिया। मगर वह साम्राज्य को सुदृढ़ आधार नहीं बना सका। नए इलाकों को जीतकर उनपर कब्जा जमाया गया मगर उनके प्रशासन की ओर ध्यान नहीं दिया गया। सफल सरदारों की मुख्य दिलचस्पी राजस्व वसूल करने में ही थी।

Margin notes:

बालाजी विश्वनाथ
(1) चौथ व सरदेशमुखी जुल्फिकार खाँ से
(2) दक्कन के 6 सूबों की चौथ-सरदेशमुखी
(3) 15000 घुड़सवार
(4) 10 लाख सालाना
(5) सैयद ब.धु की मदद फर्रुखसियर का तख्ता पलट
(6) 1720 में मरा

बाजीराव प्रथम
(1) 1720 में पेशवा
(2) गुरिल्ला युद्ध
(3) 1740 में मरा
(4) मालवा, गुजरात व बुन्देलखण्ड
(5) गायकवाड़, होल्कर, सिं. भोंसले का उदय
(6) 1733 – जंजीरा के सिद्दियों के खिलाफ
(7) पुर्तगालियों के खिलाफ
सिलसिट, बसई (बकसीन) पर कब्जा

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

(xiii) बाजीराव का 18 साल का बेटा बालाजी बाजीराव (नाना साहब) पेशवा बना। वह 1740-1761 तक पेशवा रहा। वह अपने पिता की तरह ही काबिल था।

बालाजी बाजीराव

(xiv) राजा साहू 1749 में मारा गया। उसने अपनी वसीयत के जरिए सारा राजकाज पेशवा के हाथों में छोड़ दिया। पेशवा का ओहदा अबतक वंशगत बन गया था और पेशवा ही राज्य का असली शासक हो गया था। अब वह प्रशासन का अधिकृत प्रधान हो गया। इस तथ्य के प्रतीक के रूप में वह अपनी सरकार को अपने मुख्यालय पुणे (पूना) ले गया।

नानासाहब
1) 1740-61
2) वंशगत पेशवा
3) पूने - मुख्यालय
4) निजाम को उदगीर में हराया
6) इमादुल-मुल्क को वजीर बनने में मदद
7) सदाशिवराव भाऊ
8) इब्राहीम खाँ गर्दी

(xv) बालाजी बाजीराव ने अपने पिता का अनुसरण किया और साम्राज्य को विभिन्न दिशाओं में बढ़ाया। उसने मराठा शक्ति को उसके उत्कर्ष पर पहुँचा दिया। मराठों ने सारे भारत को रौंद दिया। मालवा, गुजरात व बुंदेलखण्ड पर मराठों का अधिकार मजबूत हो गया। बंगाल पर बार-बार हमला हुआ और 1751 में बंगाल के नवाब को मजबूर होकर उड़ीसा मराठों को देना पड़ा। निजाम हैदराबाद को 1760 में उदगीर में हरा दिया और उसे 62 लाख रुपया के वार्षिक राजस्व वाले विशाल क्षेत्र को मराठों को सौंपना पड़ा। गंगा के दोआब और राजपूताने से होकर वे दिल्ली पहुँचे जहाँ 1752 में उन्होंने इमाद-उल-मुल्क को वजीर बनने में मदद दी।

(a) अहमदशाह अब्दाली ने रूहेलखण्ड के नजीबुद्दौला और अवध के शुजाउद्दौला से तुरंत गठजोड़ कर लिया। वे दोनों मराठा सरदारों के हाथों हार गए थे। आगामी संघर्ष की बड़ी अहमियत को देखकर पेशवा ने अपने नाबालिग बेटे के नेतृत्व में एक शक्तिशाली फौज उत्तर की ओर भेजी। उसका बेटा तो केवल नाम का ही सेनापति था वास्तविक सेनापति उसका चचेरा भाई सदाशिव राव भाऊ था। इस फौज का एक महत्वपूर्ण भाग था यूरोपीय ढंग से संगठित पैदल और तोपखाने की टुकड़ी जिसका नेतृत्व इब्राहीम खाँ गार्दी कर रहा था।

(b) मराठों ने अब उत्तरी शक्तियों में सहायक ढूँढने की कोशिश की। मगर उनके पहले के व्यवहार और राजनीतिक महत्वकांक्षाओं ने उन सब शक्तियों को नाराज कर दिया था। उन्होंने राजपूताना के राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया था और उनपर भारी जुर्माने तथा नजराने लगाए थे उन्होंने अवध पर बड़े क्षेत्रीय और मौद्रिक दावे किए थे। पंजाब में उनकी कार्रवाईयों ने सिख प्रधानों को नाराज कर दिया था। जिन जाट-सरदारों पर भारी जुर्माने लगाए थे, उनपर विश्वास नहीं करते थे। इसलिए उन्हें ~~अपने~~ दुश्मनों से इमाद उल-मुल्क के कमजोर समर्थन के अलावा अकेले लड़ना पड़ा। यही नहीं बड़े मराठा सेनापति लगातार आपस में झगड़ते रहते थे।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

पानीपत III

(1) 14 जनवरी 1761

(21)

(c) दोनों फौजों का पानीपत में 14 जनवरी, 1761 को एक-दूसरे से आमना-सामना हुआ। मराठा फौज के पैर पूरी तरह उखड़ गए। पेशवा का बेटा विश्वास राव, सदाशिव राव भाऊ और अनगिनत मराठा सेनापति करीब 28,000 सैनिकों के साथ मारे गए।

(d) पानीपत की हार मराठों के लिए महाविपदा के समान थी। उन्हें अपनी फौज के बेहतरीन आदमियों से हाथ धोना पड़ा और उनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा से बड़ा धक्का लगा। सबसे बढ़कर उनकी हार ने अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल और दक्षिण भारत में अपनी सत्ता मजबूत करने का मौका दिया।

(e) अफगानों को भी अपनी जीत से कोई फायदा नहीं हुआ। वे पंजाब को अपने अधिकार में नहीं रख सके। वस्तुतः पानीपत की लड़ाई ने ये फैसला नहीं किया कि भारत पर कौन राज करेगा बल्कि यह तय कर दिया कि भारत पर कौन राज नहीं करेगा।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

माधव राव

(1) 1761 में पेशवा

(2) 1771 में शाह आलम को दिल्ली लाए

(3) क्षय रोग से मरा

(4) छोटे भाई - नारायण राव

(5) BB - छोटे भाई रघुनाथ राव में संघर्ष

(6) RR - NR
↓ बेटा
सवाई माधवराव

(1) समर्थक - नाना फड़नवीस

(2) उत्तर मराठा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण — महादजी सिंधिया
↓
आगरा के पास शस्त्र निर्माण कारखाना
↓
शाह आलम को को वश में किया।
↓
पेशवा को नायब-ए-मुनायब
↓
सारी शक्ति फड़नवीस के खिलाफ साजिश

(i) 17 वर्षीय माधव राव 1761 में पेशवा बना [illegible] और राजनेता था। उसने निजाम को हराया, मैसूर के हैदर अली को नजराना देने के लिए मजबूर किया, तथा रुहेलों को हराकर और राजपूत राज्यों और जाट सरदारों को अधीन लाकर उत्तर भारत पर अपने अधिकार का फिर से दावा किया।

(ii) मराठे 1771 में बादशाह शाह आलम को दिल्ली वापस ले गए। अब बादशाह उनका पेंशनभोगी बन गया। इस प्रकार लगा कि उत्तर भारत पर मराठों का प्रभुत्व फिर कायम हो गया।

(iii) माधव राव 1771 में क्षय रोग से मर गया। अब मराठा साम्राज्य अव्यवस्था की स्थिति में पहुँच गया। पूने में बालाजी बाजीराव के छोटे भाई रघुनाथ राव और माधव राव के छोटे भाई नारायण राव के बीच सत्ता के लिए संघर्ष हुआ।

(iv) नारायण राव 1773 में मारा गया। उसकी जगह पर मरणोपरांत जन्मा उसका पुत्र सवाई माधव राव आया। निराश होकर रघुनाथ राव अंग्रेजों के पास चला गया और उनकी मदद से उसने सत्ता हथियाने की कोशिश की। फलस्वरूप पहला आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ।

सवाई माधव राव के समर्थकों का नेता नाना फड़नवीस था। इस बीच बड़े मराठा सरदार अपने लिए उत्तर में अर्धस्वतंत्र राज्य कायम करने में लगे थे। उनमें सबसे प्रमुख थे :— बड़ौदा के गायकवाड़, इंदौर के होल्कर, नागपुर के भोंसले और ग्वालियर के सिंधिया।

(v) उत्तर के मराठा शासकों में सबसे महत्वपूर्ण महादजी सिंधिया था। उसने फ्रांसीसी और पुर्तगाली अफसरों और बंदूकधारियों की सहायता से एक शक्तिशाली फौज खड़ी की तथा आगरा के पास शस्त्र निर्माण कारखाने

Scanned with CamScanner

(22)

स्थापित की। उसने 1784 में बादशाह शाहआलम को अपने वश में कर लिया। उसके कहने पर बादशाह ने पेशवा को अपना नायब-ए-गुनायब बनवाया। शर्त यह थी कि महादजी पेशवा की ओर से काम करेगा। मगर उसने अपनी शक्ति नाना फड़नवीस के खिलाफ साज़िशें करने में लगाई।

सवाई माधवराव

(vii) सवाई माधव राव 1795 में मर गया। उसकी जगह रघुनाथ राव के अत्यंत नालायक बेटे बाजीराव द्वितीय ने ली।

1) 1795 में मरा
2) रघुनाथ राव के नालायक बेटे - बाजीराव द्वितीय

(viii) अंग्रेजों ने अपनी चतुर कूटनीति के द्वारा आपस में लड़ने वाले मराठा सरदारों को विभाजित कर दिया और दूसरे व तीसरे मराठा युद्ध (क्रमशः - 1803-1805 और 1816-1819) में उन्हें हरा दिया। अन्य मराठा राज्यों को बरकरार रहने दिया गया मगर पेशवा वंश को समाप्त कर दिया गया।

1) पेशवा वंश को समाप्त

मराठा

(ix) देश के बड़े हिस्सों में अपने साम्राज्य स्थापित करने का मराठों का सपना साकार नहीं हो सका। इसका मूल कारण यह था कि मराठा साम्राज्य उसी पतनोन्मुख समाज व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता था जिसका मुगल साम्राज्य प्रतिनिधि था। दोनों एक ही प्रकार की अंतर्भूत कमजोरियों के शिकार थे। मराठा सरदार बहुत कुछ बाद के मुगल सामंतों की तरह थे, जैसे सरजामी व्यवस्था जागीर की मुगल प्रणाली के समान थी।

1) जो मुगल की कमजोरी थी वही मराठा की
2) सरजामी व्यवस्था
3) राजस्व व प्रशासन मुगल जैसे।
4) $\frac{1}{2}$ कृषि कर लिया

(x) मराठा सरदारों ने एक नई अर्थव्यवस्था विकसित करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने में असफल रहे। उन्होंने व्यापार और उद्योग में कोई दिलचस्पी नहीं ली। उनकी राजस्व प्रणाली और प्रशासन मुगलों जैसे थे। मुगलों की तरह ही मराठा शासक भी लाचार किसानों से राजस्व वसूल करने में ही मुख्य रूप से दिलचस्पी रखते थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने भी आधा - कृषि उत्पादन कर के रूप में लिया।

नायब-ए-गुनायब
SMR

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
[illegible] for Free Career Counselling
for Competitive Exams.

Scanned with CamScanner

(i) अठारहवीं सदी का भारत पर्याप्त गति से आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक प्रगति नहीं कर सका। राज्य की बढ़ती हुई राजस्व की माँगें, अफसरों के अत्याचार, सामंतों लगान के ठेकेदारों और जमींदारों की धन लिप्सा और लूट-खसोट, प्रतिद्वन्द्वी सेनाओं के आक्रमण-प्रत्याक्रमण और देश में फैले वाले अनगिनत दुस्साहसिकों की लूटपाट से जनजीवन बिल्कुल दयनीय हो गया था। इतना होने पर भी भारतीय जनता का जीवन सब मिला-जुलाकर उतना खराब नहीं था, जितना उन्नीसवीं सदी के अंत में सौ वर्षों से अधिक के ब्रिटिश शासन के बाद हुआ।

DR. AFROZE EQBAL
Net Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

(ii) अठारहवीं सदी के दौरान भारतीय कृषि तकनीकी रूप से पिछड़ी हुई जड़वत थी। सदियों से उत्पाद के तकनीक ज्यों के त्यों थे। यद्यपि उसके उत्पादन पर ही शेष समाज निर्भर था, तथापि उसका अपना पारितोषिक अत्यंत अपर्याप्त था।

(iii) यद्यपि भारतीय गाँव बहुत हद तक स्वावलंबी थे और बाहर से थोड़ा-सा ही आयात करते थे तथा संचार के साधन पिछड़े हुए थे इसके बावजूद देश के अंदर और एशिया और यूरोप के देशों के साथ मुगलों के शासनकाल में बड़े पैमाने पर व्यापार होता था।

(iv) भारत फारस की खाड़ी के इलाके से मोती, कच्चा रेशम, ऊन, खजूर, मेवे और गुलाब जल, अरब से कहवा, सोना, दवाएँ और शहद, चीन से चाय, चीनी, चीनी मिट्टी और रेशम, तिब्बत से सोना, कस्तूरी और ऊनी कपड़ा, सिंगापुर से टिन, इंडोनेशियाई द्वीपों से मसाले, इत्र, शराब और चीनी, अफ्रीका से हाथी दाँत और दवाएँ और यूरोप से ऊनी कपड़ा, ताँबा, लोहा और सीसा जैसी वस्तुएँ और कागज का आयात करता था।

(v) भारत के निर्यात की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु थी सूती वस्त्र। भारतीय सूती कपड़े अपनी उत्कृष्टता के लिए सारी दुनिया में मशहूर थे और उनकी हर जगह माँग थी। भारत कच्चा रेशम, रेशमी कपड़े, लोहे का सामान, नील, शोरा, अफीम, चावल, गेहूँ, चीनी, काली मिर्च और अन्य मसाले, रत्न और औषधियाँ भी निर्यात करता था।

(vi) भारत हस्तशिल्प और कृषि के उत्पादनों में कुल मिलाकर स्वावलंबी था, इसलिए वह बड़े पैमाने पर विदेशी वस्तुओं का आयात नहीं करता था। दूसरी ओर उसके औद्योगिक और कृषि उत्पादनों के लिए विदेशों में नियमित बाजार था, फलस्वरूप उसका निर्यात उसके आयात से अधिक होता था। विदेश व्यापार को चाँदी और सोने के आयात द्वारा संतुलित किया जाता था।

फारस की खाड़ी से
मोती, कच्चा रेशम, खजूर, मेवे, गुलाब जल

अरब से
कहवा, सोना, दवाएँ, शहद

चीन से
चाय, चीनी, चीनी मिट्टी, रेशम

तिब्बत से
सोना, कस्तूरी, ऊनी कपड़ा

सिंगापुर से
टिन

इंडोनेशियाई द्वीप से
मसाले, इत्र, शराब, चीनी

अफ्रीका से
हाथी दाँत, दवाएँ

यूरोप से
ऊनी कपड़ा, ताँबा, लोहा व सीसा

भारत से
(1) सूती वस्त्र (2) हस्तशिल्प (3) कृषि उत्पाद (4) कच्चा रेशम (5) नील (6) शोरा (7) अफीम (8) मसाले (9) रत्न

Scanned with CamScanner

(24)

(ii) अठारहवीं सदी के दौरान लगातार लड़ाई और अनेक इलाकों में कानून और व्यवस्था भंग हो जाने से देश के आंतरिक व्यापार को हानि पहुँची। अनेक व्यापारिक केंद्रों को सत्ता के दावेदारों और विदेशी आक्रमणकारियों ने लूट लिया। अनेक व्यापारिक मार्ग डाकुओं के संगठित दलों से भरे हुए थे। व्यापारी और उनके काफिले लगातार लूटे जाते रहे। यहाँ तक कि दो शाही शहरों, दिल्ली और आगरा के बीच की सड़क भी लुटेरों से सुरक्षित नहीं थी।

(iii) सामंत ही विलास की वस्तुओं के सबसे बड़े उपभोक्ता थे। विलास की वस्तुओं का ही व्यापार होता था। सामंतों के गरीब होने से आंतरिक व्यापार को भी धक्का लगा।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact: Free Career Counselling
for Competitive Exams

नादिरशाह ने लूटा दिल्ली को
अहमदशाह अब्दाली ने लाहौर, दिल्ली व मथुरा
जाटों ने आगरा को
मराठों ने सूरत, गुजरात तथा दक्कन
सिखों ने सरहिंद

(a) दिल्ली को नादिरशाह ने लूटा और लाहौर, दिल्ली और मथुरा को अहमदशाह अब्दाली द्वारा। आगरा को जाटों ने, सूरत व गुजरात के अन्य शहरों तथा दक्कन को मराठों ने और सरहिंद को सिखों ने लूटा।

(b) इसके बावजूद देश के अन्य भागों में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के क्रिया कलापों के कारण यूरोप के साथ व्यापार बढ़ने के फलस्वरूप कुछ उद्योगों ने उन्नति की।

फैजाबाद, लखनऊ, वाराणसी पटना का उदय

(c) नए दरबारों और नए सरदारों के अविर्भाव के कारण फैजाबाद, लखनऊ, वाराणसी और पटना जैसे नगरों का उदय हुआ। दस्तकारी की हालत में थोड़ा सुधार हुआ।

(d) फिर भी भारत व्यापक विनिर्माण का देश बना रहा। तब भी भारत सूती और रेशमी कपड़े, चीनी, जूट, रंग सामग्रियाँ, खनिज तथा हथियारों, धातु के बर्तनों जैसे धातु के उत्पादनों और शोरा और तेलों का बड़े पैमाने पर उत्पादक था।

कपड़ा उद्योग के केंद्र था

(e) कपड़ा उद्योग के महत्वपूर्ण केंद्र थे :- बंगाल में ढाका व मुर्शिदाबाद, बिहार में पटना, गुजरात में सूरत, अहमदाबाद व भड़ौंच, म०प्र० में चंदेरी, महाराष्ट्र में बुरहानपुर, उ०प्र० में जौनपुर, बनारस, लखनऊ और आगरा, पंजाब में मुल्तान और लाहौर, आ०प्र० में मछलीपट्टनम, औरंगाबाद, चिकाकोल और विशाखापटनम, कर्नाटक में बंगलौर तथा तमिलनाडु में कोयंबतूर व मदुरै।

ऊनी वस्त्र का केन्द्र
(1) कश्मीर
जहाज निर्माण उद्योग
महाराष्ट्र, आ० प्र० व बंगाल

(f) कश्मीर ऊनी वस्त्रों का केंद्र था। महाराष्ट्र, आंध्र और बंगाल में जहाज निर्माण उद्योग विकसित हुआ था। यूरोपीय कंपनी ने अपने इस्तेमाल के लिए भारत में बने कई जहाज खरीदे।

Scanned with CamScanner

25

(i) अठारहवीं सदी के प्रारंभ में भारत विश्व-व्यापार और उद्योग के प्रमुख केंद्रों में था। रूस के पीटर महान ने कहा था : याद रखो कि भारत का वाणिज्य विश्व का वाणिज्य है और ---- जो उस पर पूरा अधिकार कर सकेगा वही यूरोप का अधिनायक होगा।

(ii) अठारहवीं सदी के भारत में शिक्षा कुल मिलाकर वह त्रुटिपूर्ण थी, वह परंपरागत थी और पश्चिमी दुनिया में हुए द्रुत परिवर्तनों से उसका कोई संपर्क नहीं था। वह जो ज्ञान देती थी वह साहित्य, कानून, धर्म, दर्शनशास्त्र और तर्कशास्त्र तक ही सीमित था। उसने भौतिक और प्राकृतिक प्रौद्योगिकी और भूगोल के अध्ययन पर कोई ध्यान नहीं दिया।

(iii) हिन्दुओं में उच्च शिक्षा संस्कृत के माध्यम से होती थी और मुख्यतः ब्राह्मणों तक सीमित थी। तत्कालीन राजकीय भाषा होने के कारण फारसी शिक्षा हिंदुओं और मुसलमानों में समान रूप से लोकप्रिय थी।

(iv) प्राथमिक शिक्षा काफी व्यापक थी। हिंदुओं में प्राथमिक शिक्षा शहर और गाँव की पाठशालाओं के जरिये दी जाती थी। मुसलमानों में यह काम मस्जिदों में स्थित मकतबों में मौलवी करते थे।

(v) दिलचस्प बात यह है कि उस समय औसत साक्षरता ब्रिटिश शासनकाल की अपेक्षा कम नहीं थी। इतना ही नहीं 1813 वारेन हेस्टिंग्ज ने भी लिखा था कि आम तौर पर यूरोप के किसी भी देश के लोगों के मुकाबले भारत के लोग पढ़ने, लिखने और अंकगणित में अधिक प्रतिभाशाली थे।

(vi) एक खराब बात थी कि लड़कियों को विरले ही शिक्षा मिलती थी यद्यपि उच्च जातियों की कुछ औरतें पढ़ी-लिखी थीं जिसे एक अपवाद ही कहा जा सकता है।

(vii) जाति प्रथा ने लोगों का कठोर विभाजन कर रखा था और सामाजिक क्रम में उनके स्थान स्थायी रूप से निश्चित कर दिये थे। ब्राह्मणों के नेतृत्व में उच्च जातियों ने सब सामाजिक प्रतिष्ठा और विशेषाधिकार पर अपना एकाधिकार कायम कर रखा था।

(viii) बहुधा जातियाँ ही पेशे को निर्धारित करती थीं, यद्यपि काफी बड़े पैमाने पर अपवाद भी घटित होते थे। मसलन ब्राह्मण व्यापार में संलग्न थे तथा सरकारी सेवाओं में भी थे, कुछ के पास जमींदारी भी थी। इसतरह बहुत से शूद्र कहे जाने वाले लोग काफी सफल और आर्थिक रूप से संपन्न थे।

(ix) अठारहवीं सदी के भारत में जाति एक बड़ी विभाजक शक्ति और विघटन का एक बड़ा तत्व था। उसने बहुधा एक ही गाँव या इलाके में रहने वाले हिंदुओं को अनेक अत्यंत छोटे समूहों में बाँट रखा था। उच्च ओहदे या सत्ता प्राप्त कर किसी भी व्यक्ति के लिए ऊँचा सामाजिक दर्जा हासिल करना संभव था। उदाहरण के लिए, अठारहवीं सदी में होलकर परिवार ने ऐसा ही किया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Free Career Counselling

Scanned with CamScanner

(26)

मुसलमान भी जाति, नस्ल, कबीले और दर्जे की दृष्टि से कम विभाजित नहीं थे हालांकि उनके धर्म ने सामाजिक समानता का निर्देश दिया था।

पितृसत्तात्मक
1) केरल के नायर — मातृप्रधान

(b) अठारहवीं सदी के भारत में परिवार की व्यवस्था पितृसत्तात्मक थी। परंतु केरल के नायर समुदाय में परिवार मातृ प्रधान था।

(c) युद्ध और अराजकता के समय भी औरतों को विरले तंग किया जाता था। उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार किया जाता था। उन्नीसवीं सदी के आरंभ में एक यूरोपीय पर्यटक ऐब्बे जे० ए० दुबाय ने टिप्पणी की "एक हिंदू औरत कहीं भी, यहाँ तक कि अत्यंत भीड़-भाड़ वाली जगहों में भी, अकेले जा सकती है, और उसे आवारा और अकर्मण्य लोगों की ढीठ निगाहों और दिल्लगियों का डर नहीं होता --- ऐसा मकान, जिसमें केवल औरतें रहती हैं एक ऐसा पवित्र स्थान है जिसकी मर्यादा भंग करने का ख्याल कोई अत्यंत निर्लज्ज लंपट स्वप्न में भी नहीं ला सकता।

अहिल्या बाई
इंदौर पर शासन
1766-1796

(d) अहिल्या बाई ने इंदौर पर 1766 – 1796 तक बड़ी सफलता के साथ शासन किया।

पर्दा
उच्च वर्ग में
① दक्कन में नहीं

(e) पर्दा अधिकतर उत्तर भारत के उच्च वर्गों में ही प्रचलित था। दक्षिण भारत में उसका प्रचलन नहीं था।

दहेज
बंगाल व राजपूताना

(f) दहेज की कुप्रथा खासकर बंगाल और राजपूताना में व्यापक रूप से प्रचलित था। महाराष्ट्र में उसे कुछ हद तक पेशवा ने प्रभावशाली ढंग से दबा दिया था।

सती प्रथा
① दक्कन में नहीं

(g) सती प्रथा अधिकतर राजपूताना, बंगाल और उत्तरी भारत के अन्य हिस्सों में प्रचलित थी। सती प्रथा दक्षिण भारत में प्रचलित नहीं थी। राजपूताना और बंगाल में भी सती प्रथा का प्रचलन केवल राजाओं, सरदारों, बड़े जमींदारों तक था और उच्च जातियों की विधवाएँ फिर से शादी नहीं कर सकती थी।

विधवा पुनर्विवाह
① राजा सवाई जय सिंह
② मराठा सेनापति — परशुराम भाऊ

(h) आमेर के राजा सवाई जयसिंह और मराठा सेनापति परशुराम भाऊ ने विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा देने की कोशिश की मगर वे असफल रहे।

संगीत
मुहम्मदशाह के शासनकाल में

(i) अठारहवीं सदी में संगीत विकसित होता और फलता-फूलता रहा। इस क्षेत्र में मुहम्मदशाह के शासनकाल में महत्वपूर्ण प्रगति हुई।

(ii) अठारहवीं सदी के साहित्यिक जीवन का एक उल्लेखनीय पहलू था उर्दू भाषा का प्रसार और उर्दू कविता का जोरदार प्रसार व विकास, उसने मीर, सौदा, नजीर और उन्नीसवीं सदी की महान प्रतिभा मिर्जा गालिब जैसे प्रखर कवियों को पैदा किया।

(iii) मलयालम साहित्य में भी पुनर्जीवन देखा गया। यह विशेषकर त्रावणकोर शासकों मार्तंड वर्मा और राम वर्मा के संरक्षण में हुआ। केरल एक महान कवि कुंचन नांबियार इसी समय हुआ।

(iv) अठारहवीं सदी के केरल में कथकली साहित्य, नाटक और नृत्य का भी पूर्ण विकास हुआ। अनोखी वास्तुकला और भित्ति चित्रों वाला पद्मनाभन राज्य प्रसाद भी अठारहवीं शताब्दी में बनाया गया।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

(v) तायुमानवर (1706-44) तमिल में सित्तर काव्य का एक उत्कृष्ट प्रवर्तक था।

(vi) असम में साहित्य अहोम राजाओं के संरक्षण में विकसित हुआ।

27

(vii) गुजरात के एक महान गीतकार दयाराम ने 18वीं सदी उत्तरार्द्ध के दौरान अपनी रचनाएं लिखीं।

(viii) पंजाबी के मशहूर प्रेम महाकाव्य, हीर रांझा की रचना वारिस शाह ने इसी काल में की।

(ix) सिंधी साहित्य के लिए 18वीं शताब्दी विशाल उपलब्धियों की अवधि थी। इसी दौरान शाह अब्दुल लतीफ ने अपना प्रसिद्ध कविता संग्रह "रिसालो" रचा। सचल और सामी इस शताब्दी के अन्य महान कवि थे।

(x) भारतीय संस्कृति की मुख्य कमजोरी विज्ञान के क्षेत्र में थी। अठारहवीं शताब्दी के दौरान भारत पश्चिमी देशों से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के मामले में काफी पिछड़ा रहा।

(xi) अठारहवीं शताब्दी के भारतीय शासकों ने लड़ाई के हथियारों और सैनिक प्रशिक्षण की तकनीकों को छोड़कर किसी भी पश्चिमी चीज में बहुत कम दिलचस्पी दिखाई।

(xii) विख्यात ब्रिटिश अधिकारी जान मैल्कम ने 1821 में टिप्पणी की थी "मैं किसी अन्य महान जनसंख्या का उदाहरण नहीं जानता, जिसने समान परिस्थितियों में, उथल-पुथल और निरंकुश शासन के इस तरह के काल में स्वयं सद्गुणों और खूबियों को संजोए रखा है, जो यहां के अधिकांश देश वासियों में पाई जाती है।

(xiii) हिंदू और मुसलमान गैर-धार्मिक क्षेत्रों जैसे सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक कार्यों में परस्पर सहयोग करते थे। हिंदू लेखकों ने बहुधा फारसी में लिखा और मुसलमान लेखकों ने हिंदी, बंगला और अन्य देशी भाषाओं में लिखा। मुसलमान लेखकों की विषय-वस्तु बहुधा हिंदू सामाजिक जीवन और धर्म, जैसे राधा-कृष्ण, सीता-राम और नल-दमयंती होती थी।

(xiv) बड़ी संख्या में हिंदू मुसलमान संतों की पूजा करते थे और अनेक मुसलमान भी हिंदू देवताओं और संतों के प्रति समान श्रद्धा रखते थे। अजमेर में शेख मुईनुद्दीन चिश्ती के पवित्र स्थान की मदद तंजौर के राजा किया करते थे। टीपू, शृंगेरी के मंदिर तथा अन्य मंदिरों को भी आर्थिक मदद दिया करता था। उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में सबसे महान भारतीय राजा राम मोहन राय हिंदू और इस्लामी दार्शनिक तथा धार्मिक सिद्धांतों से समान रूप में प्रभावित थे।

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner